HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

# मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, युगाब्द 5122, जून 2020

## कोरोना में पर्यावरण संरक्षण

मूल्य 20/- प्रति

# कोविड महामारी के दौरान सोशल मीडिया से जागरूकता

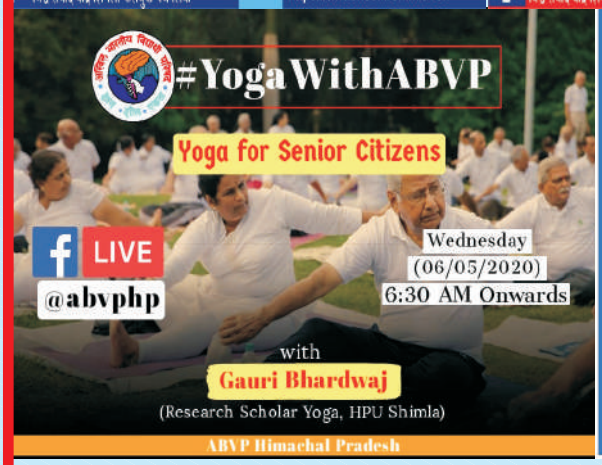


## अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

ने युवाओं को लॉकडाउन के दौर में भी ऊर्जावान रखने में अहम भूमिका निभाई। 'कोरोना हारेगा भारत जीतेगा' जैसी ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ करवाई और रक्तदान भी किया, जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़ का भाग लिया।

## जिलाधीश को सौंपी 30 पीपीई किट्स

### आरएसएस के स्वयंसेवक दिनेश मैनन व परिवार कर रहा समाज सेवा

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। ऊना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक दिनेश मैनन व उनका परिवार लगातार कोरोना वायरस के चलते बने हालात में समाजसेवा में अग्रणी रहकर काम कर रहे हैं।

एक माह से तीन समय का भोजन व चाय दे रहे

पिछले एक माह से जहां दिनेश मैनन व उनका परिवार लगातार तीन समय तक नाश्ता, भोजन व चाय जिला ऊना में वितरित कर रहे हैं। वहीं इस मुहिम में उन्हें ओएनजीसी का पूरा साथ मिल रहा है। दिनेश मैनन ने शनिवार

डीसी ऊना को पीपीई किट्स देते हुए दिनेश मैनन।

मुलाकात कर उन्हें 30 पीपीई किट्स भेंट की। ये किट्स कोरोना योद्धाओं के काम आएंगी।

उन्होंने कहा कि भविष्य में भी जरूरत पड़ने पर प्रशासन को जहां पीपीई किट्स दी जाएंगी। वहीं जो भी आवश्यकता होगी, उसे पूरा किया जा रहा है। जिला में करीब 210 किलोमीटर का सफर तय किया जाता है। उन्होंने कहा कि लोअर देहलां से मैनन परिवार से नीरज, करण, शुभलता, प्रेम लता, सुदेश, सिम्मी, लज्जा देवी, राज कुमारी मैनन, सतीश मैनन, रजत मैनन सहित अन्य अपना विशेष सहयोग प्रदान कर रहे हैं। इस मौके पर डीसी संदीप कुमार ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ओएनजीसी और आरएसएस ने पीपीई किट्स दी है, जिन्हें स्वास्थ्य विभाग के सुपुर्द किया जाएगा, ताकि कोरोना योद्धाओं को और अधिक सुविधाएं मिल सकें। उन्होंने कहा कि कोरोना के

हमारे सेवा के क्रम को जहां राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ को बड़ी प्रेरणा है। वहीं ओएनजीसी को एचआर निर्देशक अल्का मित्तल ने हमारे कार्य को बेहतर आधार प्रदान किया है, जिसके लिए हम ओएनजीसी के

RSS

RSS @RSSorg · 30m

वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखकर संघ ने अप्रैल से जून तक होने वाले लगभग 90 से अधिक संघ शिक्षा वर्ग एवं अन्य सभी सार्वजनिक व सामूहिक कार्यक्रम निरस्त कर दिये हैं। - डॉ. मनमोहन वैद्य

## कोलकाता से हिमाचल श्रमिकों की वापसी

विदेशी साबुन से भी सस्ता और अच्छा है इंडियन (स्वदेशी) साबुन

विदेशी टूथपेस्ट से भी सस्ता, अच्छा और आयुर्वेदिक है इंडियन (स्वदेशी) टूथपेस्ट

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 20 अंक : 06 | ज्येष्ठ-आषाढ़ कलियुगाब्द 5122, जून 2020

**सम्पादक**

डॉ. दयानन्द शर्मा

**सह-सम्पादक**

वासुदेव शर्मा

**सम्पादक मण्डल**

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

**पत्रिका प्रमुख**

शांति स्वरुप

**वितरण प्रमुख**

जय सिंह ठाकुर

**कार्यालय**

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

**प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा**

| | |
|---|---|
| मासिक शुल्क | ₹20 |
| वार्षिक शुल्क | ₹100 |
| आजीवन शुल्क | ₹1000 |

**वैधानिक सूचना:** पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

| | | |
|---|---|---|
| संपादकीय | कोरोना विपत्ति आपातकाल जैसी नहीं | 5 |
| चिन्तन | अपना घर अपनी छत | 6 |
| प्रेरक प्रसंग | भगवान भरोसे | 7 |
| आवरण | कोरोना काल और पर्यावरण दिवस | 8 |
| देश प्रदेश | योग-यज्ञ कर लिया चीनी बहिष्कार | 13 |
| देवभूमि | पठाअ चित्रकारी | 14 |
| पुण्य जयंती | जन्मजात देशभक्त थे डॉ. हेडगेवार | 15 |
| कृषि जगत | गाय की प्रजातियां | 17 |
| काव्य जगत | बाधाओं से हार नहीं | 18 |
| महिला जगत | परिवार का प्यार-दुलार मिले तो | 19 |
| पुण्य स्मरण | प्यारेलाल बेरी की चीखें | 20 |
| स्वास्थ्य जगत | एक कदम निरोगी भारत की ओर | 21 |
| घूमती कलम | बीएलएम आंदोलन और भारत | 22 |
| समसामायिकी | कुरान और हैरिस के कई प्रश्न | 23 |
| विविध | पराक्रम का हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव | 25 |
| प्रतिक्रिया | शिकायत दर्ज करे भारत | 27 |
| दृष्टि | बिहार में करवट लेने लगा कालीन उद्योग | 28 |
| विश्व दर्शन | अमेरिका जॉर्ज फ्लॉयड विवाद में | 29 |
| साइबर गड़गप | ..... | 30 |
| विशेष | बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का षड़यंत्र | 31 |
| बाल जगत | पेंसिल और रबर | 33 |

# पाठकीय...

**संपादक महोदय,**

कोरोना महामारी का समय भी किसी बड़े काल से कम नहीं, विश्व संकट में आंकड़ा अब 1 करोड़ पहुंचा गया है। लेकिन अच्छी बात है कि 50 लाख से ज्यादा लोग ठीक हुए हैं और 5 लाख से ज्यादा की मौत अभी तक संपूर्ण विश्व में हो चुकी है। दिल्ली, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात में महामारी ने मकड़ी की तरह जाल बुना और कई क्षेत्रों में संक्रमण फैला है। चीन के लिए व्यापार, विश्वासियों हेतु पिंजरे में कैद जैसी स्थिति हुई। संपूर्ण विश्व मे आयुर्वेद व योग कोरोना को हराने मे कारगर साबित हो रहा है। पतंजलि की दवा को अनुमति मिले तो अपने देश के लोगों को सुखद अनुभूति होगी। शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में कोरोना ने पारिवारिक एकता और परिवार प्रबोधन की परंपरा बढ़ाई है। ◆◆◆ **शांति गौतम, पत्रकार बद्दी, सोलन**

---

**महोदय,**

मातृवन्दना पत्रिका अपने प्रदेश की जानी मानी पत्रिका है। इसको और अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। इसके लेखों में स्तरीय सामग्री का अंश कुछ और बढे तो अच्छा है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन में सहायक होती विभिन्न प्रकार की लेखन सामग्री पत्रिका को और स्तरीय और सार्थक बना सकती है। देश में छप रही हमारी अन्य पत्रिकाएं हमारा मार्गदर्शन कर सकती हैं। आशा है अन्यथा नहीं लेंगे। सुझाव के तौर पर कृपया इस पर ध्यान दें। ◆◆◆ **वैद्य राजेश कपूर, सोलन**

---

**महोदय,**

भारत में कोरोना के मामले तेजी से बढ़ते ही जा रहे हैं। जहाँ संक्रमित लोगों का आंकड़ा दस हजार को पार कर गया है, वहीं एक हजार से अधिक स्वस्थ होकर भी लौटे हैं। पूरा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा है। भारत की परेशानियां भी बढ़ती जा रही हैं। स्थिति को देखते हुए लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग ही इससे लड़ने के प्राथमिक उपाय हैं। सीमित साधनों के साथ भारत ने संयम और संकल्प की ताकत पर महामारी की रफ्तार को कम कर इसे दूसरे चरण में ही रोके रखा है। देश की इच्छा को प्रधानमंत्री ने तीन मई तक के लिए बढ़ा कर एक अच्छा निर्णय किया है। उन्नीस दिनों के लिए जनता को अपनी साधना को आगे बढ़ाना है। इस अवधि में घर परिवार में बुजुर्गों की सेहत का ध्यान, लॉकडाउन और सामाजिक दूरी का ईमानदारी से पालन, आयुष मंत्रालय के सुझावों को दिनचर्या में शामिल कर अपनी रोग प्रतिरोधात्मक शक्ति बढ़ाना, गरीबों की सहायता करना, अपने अधीन काम करने वाले लोगों को नॉकरी पर बनाए रखना, घर पर बनाए गए फेस मास्क या गमछे का प्रयोग करना, आरोग्य सेतु एप का प्रयोग करना जैसे उपायों को अपनी तपस्या में कढ़ाई से पालन का आह्वान काबिले तारीफ है। गम्भीर आर्थिक संकट के मध्य जनसामान्य को आर्थिक नुकसान होना स्वाभाविक है। बढ़े लॉकडाउन में सभी मुश्किलों का मुकाबला करते हुए, एक मजबूत इच्छा शक्ति के साथ स्वयं तो नियमों का पालन करना ही है, दूसरों को भी इसके लिए उदाहरण बनना है।◆◆◆**जोगिन्द्र ठाकुर गाँव व डाकघर भल्याणी कुल्लू**

## जून माह के शुभ मुहूर्त

जून – 11, 13, 15, 16, 25, 27, 29 और 30 जून में शुभ विवाह के मुहूर्त हैं। महावीर और ऋषिकेश पंचांग, बनारस के अनुसार (शुक्रवार) 26 जून, शनिवार 27 जून, रविवार 28 जून सोमवार 29 जून, मंगलवार 30 जून. को विवाह के शुभ मुहूर्त माने गये हैं।

*2 जून को भारतीय मनीषा का प्रतिनिधि पर्व निर्जला एकादशी है। इस दिन स्वयं निर्जला रहकर उपवास करें, पर अन्यों के लिए शीतल जल, शर्बत की छबील लगाएं। प्याऊ द्वारा व्यवस्था करें। यह व्यवस्था थोड़ी-थोड़ी दूर पर हर रास्ते और गली-मौहल्ले में हो, सजग समाज बन्धु, संवेदनशील और समर्थ सज्जन करें। कथा कोब छोड़ दें, तो कर्म काण्ड तो इतना ही बताया गया है। गहरी बात है हमारा चिन्तन, हमारी चिन्ता और हमारा आचरण। चिन्तन ऐसा कि हम स्वयं के लिए प्रकृति द्वारा प्रदत्त साधनों का प्रयोग कम से कम करें--अभाव के कारण, विवशता है, ऐसा कदापि नहीं । परहित सरिस धर्म नहीं भाई, परोपकाराय पुण्याय, यही भावना हमारी है। इसी प्रकार के करणीय कार्यों को हम धार्म कहते हैं, इसलिए यह धार्मिक पर्व हैं। साधक के लिए कठिन साधना और समाज के समुत्कर्ष का सफल साधन।*

**शिकायत व सुझाव** के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
**0177-2836990** **7650000990**
ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को हिन्दू साम्राज्य दिवस, संत कबीर जयंती व अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

## स्मरणीय दिवस ( जून 2020 )

| | |
|---|---|
| हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव | 4 जून 2020 |
| संत कबीर जयंती/पर्यावरण दिवस | 5 जून 2020 |
| श्री गंगा दशहरा | 11 जून 2020 |
| अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस | 21 जून 2020 |
| गुप्त नवरात्र प्रारम्भ | 22 से 29 जून 2020 |

# कोरोना विपत्ति आपातकाल जैसी नहीं

इस संसार की सच्चाई है कि यहां न कुछ पूरा है, न ही कुछ अधूरा। मौत का ताण्डव जब दृष्टिगत हो और उसे रोकने के समस्त उपाय अधूरे प्रतीत हों, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था चरमरा रही हो, ऐसे में मनुष्य को अपनी मेधा, कुशलता, समृद्धि एवं सामर्थ्य की अल्पता का ज्ञान हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं। कोरोना अर्थात् कोविड-19 नामक संक्रमण रोग ने विश्व को एक ऐसी विचित्र एवं भयावह स्थिति में धकेल दिया है जहां वह स्वयं को असहाय महसूस कर रहा है। यह महामारी संसार के सामाजिक प्राणी को असामाजिक प्राणी बनाने पर तुली हुई है। आवागमन, मेल-मिलाप, खेल-कूद, पढ़ाई-लिखाई, मेले-त्यौहार, जलसे-जलूस, धार्मिक स्थलों की आस्थापूर्ण यात्रा एवं पर्यटन तथा अन्य समस्त क्रिया-कलापों एवं गतिविधियों के सभी मार्ग मानो अवरूद्ध हो चुके हैं। सभी संक्रमित देश एक ओर जीवन को बचाने की कवायद में जुटे हैं दूसरी ओर जीवित रहने की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चिंतित भी दिखाई देते हैं। इस असाध्य संक्रामक रोग के निवारण हेतु विश्व के प्रख्यात स्वास्थ्य विशेषज्ञ, चिकित्सक एवं वैज्ञानिक अन्वेषणरत हैं किन्तु अध-पर्यन्त पूर्णतया सफलता प्राप्ति के प्रति आश्वस्त नहीं। सभी विकसित देश और भारत के वैज्ञानिक भी वैक्सीन बनाने में जुटे हुए हैं। सम्भवत: इस रोग को थामने वाली वैक्सीन इस वर्ष के अन्तिम-चरण में बनकर तैयार हो जाए और विश्व इस महामारी से स्वयं की रक्षा कर सके।

एक विदेशी एजेंसी का सर्वे बताता है कि यदि प्रधानमंत्री मोदी अथवा भारत सरकार ने समय पर लॉकडाउन न किया होता तो वर्तमान में संक्रमितों की संख्या 50 लाख से ऊपर होती और अढ़ाई लाख लोग मौत के मुंह में चले जाते। लॉकडाउन में ढील और अनलॉक से सम्भवत: संक्रमितों की संख्या कई लाखों में भले ही बढ़ जाये किन्तु अब केन्द्र और राज्यों की इस महामारी से लड़ने की पूरी तैयारी है। महामारी जांच प्रक्रिया में भारत ने महज दो महीनों में ही लम्बा सफर तय कर लिया है। अब प्रतिदिन लाखों कोरोना टैस्ट हो रहे हैं। पी.पी.ई. किट्स मास्क, वैन्टिलेटर एवं वीटीएम आदि पर्याप्त मात्रा में भारत में ही बन रहे हैं। कोरोना मरीजों के लिए हॉस्पिटल में बैड एवं आई.सी.यू की पूरी व्यवस्था है।

स्वामी रामदेव ने भी इम्यूनिटी वर्धक एवं रोग निरोधक औषधि तैयार करने का दावा प्रमुख टीवी चैनलों के माध्यम से जनता के सम्मुख किया है। मृत्यु दर अन्य संक्रमित देशों से अपेक्षाकृत काफी कम है। संक्रमित रोगियों के स्वस्थ होने की संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। भारत वैक्सीन परीक्षण के अन्तिम चरण में पहुंच चुका है। प्रधानमंत्री और केन्द्र की सरकार इस भयानक आपदा से बड़ी मुस्तैदी से लड़ती नजर आ रही है। आर्थिक चुनौती का सामना करते हुए भी हर वर्ग के लोगों की ऐसे संकट काल में सहायता की जा रही है। जन-जन में आत्मविश्वास बढ़ता जा रहा है। स्वदेशी वस्तुओं का उत्पादन एवं उपयोग हो। आत्मनिर्भर भारत बनें, प्रधानमंत्री का संदेश भारतीय जन-मानस में घर घर तक पहुंच चुका है।

इस संकटकाल में भी विपक्ष विशेष रूपेण कांग्रेस सहयोग के स्थान पर सरकार की कटु आलोचना में व्यस्त है। सोनिया एवं राहुल गांधी का मानना है कि मोदी निरंकुश होकर शासन कर रहे हैं। देश की स्थिति दयनीय हो चुकी है। यह भारत के लिए आपातकाल है। यदि कोई उनसे पूछे कि सन् 1975 के आपात्काल में और आज के आपात्काल में कितना अन्तर है, तो शायद ही उनके पास इसका कोई उत्तर हो। 5 जून 1975 को इन्दिरा गांधी ने पूरे देश में आपातकाल लागू कर दिया था। उस कालावधि में किस प्रकार का दमनचक्र राजनीतिक, सामाजिक व मीडिया पर चला था उसकी सिहरन आज भी शारीरिक पीड़ा देती है। आप इस विषय में अंक के लेखों में आगे पढ़ेंगे। आपातकाल में अधिकांश सर्वकारीय सेवाओं का दुरूपयोग किस प्रकार हुआ यह जगजाहिर है। उस समय पुलिस एवं रक्षा कर्मियों को राजनीतिक विरोधियों को कुचलने एवं प्रताड़ित करने के लिए बाध्य किया गया। डॉक्टर एवं नर्स तथा अन्य स्वास्थ्य कर्मियों को जबरन नसबन्दी कराने का काम सौंपा गया जबकि आज यही पुलिसकर्मी डॉक्टर-नर्स एवं स्वास्थ्य एवं सफाई कर्मचारी अपनी जान जोखिम में डालकर कोरोना महामारी से लोगों की जान बचाने में जुटे हुए हैं। आपातकाल में न्याय व्यवस्था चरमरा गई थी, मीडिया का गला दबा दिया गया था और देशवासी एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखने लगे थे। जबकि आज की इस घोर आपदा में भी न्याय-व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त है और मीडिया भी स्वतन्त्र रूप से साकारात्मक भूमिका निभा रहा है। सभी वर्ग के लोग एक-दूसरे की सहायता में जी-जान से जुटे हुए हैं। लॉक-डाउन में सभी प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियां ठप हो जाने पर भी आम जनता ने धैर्य का परिचय देकर सरकार का साथ दिया है। सभी को विश्वास है कि यह देश इस संकट से शीघ्र ही उभर कर आगे बढ़ने के लिए तत्पर हो जाएगा।

# अपना घर अपनी छत

... रश्मि दाधीच

शरीर से अपंग विक्रम कचरे के ढेर में आंखें गढ़ा कर हाथों से प्लास्टिक की थैलियां और बोतलें बीनकर बोरे में भर रहा था। वहीं उसके आस-पास उनके तीन छोटे-छोटे बच्चे भी मां का इसी काम में हाथ बंटा रहे थे। आखिर कचरे के इसी ढेर से विक्रम जैसे कई परिवारों का चूल्हा जलता था।

फटे कपड़ों में धूल से सनी दस वर्ष की गीता दूर से लोगों को ठेले पर समोसे का लुत्फ उठाते देख रही थी। खाने वाले कुछ समझ पाते इससे पहले उसने समोसे की एक प्लेट में धूल उड़ा दी, क्रोधित ग्राहक ने बालिका को चांटा लगाकर प्लेट डस्टबिन में फेंक दी। इस तरह गीता (परिवर्तित नाम) ने भी जिंदगी में पहली बार समोसे का स्वाद चखा व अब वो अकसर ऐसा करने लगी। यह मनगढ़ंत कहानियां मध्य प्रदेश के आगर मालवा में पारधी समाज के लोगों का वो पीडादायक सच था जिससे सभी ने मुंह फेर रखा था। घुमंतु समाज प्रवरता मंच ने प्रवासी समुदाय (घुमन्तु) संगठन गठित कर पारधी समाज के इन पचास परिवारों के बीच काम शुरु किया व बदलाव की नयी तस्वीर लिखी।

आज जब विक्रम प्रधानमंधी गृह योजना से मिले अपने घर से नौकरी करने निकलते हैं तो, स्कूल यूनिफॉर्म पहने अपने बच्चों को देखकर उनका मन संतोष से भर जाता है। परिवर्तन की इस सुखद पटकथा को लिखने वाले प्रवासी समुदाय प्रमुख रवि बुंदेला बताते हैं कि घुमंतु समाज के लोग दस्तावेजों के अभाव में सरकार की किसी योजना का लाभ नहीं उठा पाते थे। आधार व राशन कार्ड बनवाकर पहले उन्हें मुख्य धारा का हिस्सा बनाया गया। आज आत्मविश्वास इनकी ताकत बन चुका है। कोरोना काल में इन परिवारों ने मंच द्वारा बांटी जा रही राशन सामग्री लेने से न केवल मना किया बल्कि इन परिवारों के युवा मदद के लिए आगे आए। कालबेलिया, पारधी, गड़ोलिया अलग-अलग नामों से जानी जाने वाली ये घुमंतु जन जातियां देशभर में भीख मांगकर या कचरा बीनकर या फिर अन्य छोटे-मोटे काम कर जीवन-यापन करने को मजबूर हैं। प्रवासी समुदाय आगर मालवा के जिला संयोजक हर्ष तिवारी बताते हैं कि यह काम इतना आसान नहीं था। अपने ही देश के लोगों से मिली घृणा, अपमान एवं निम्न जाति के समझे जाने का दंश पारधी समाज के मन में घर कर चुका था। इसलिए शुरूआत में वे कार्यकर्ताओं पर विश्वास करने को तैयार नहीं थे। बड़े जतन से शुरू किया गया बाल संस्कार केंद्र भी तीन बार बंद करना पड़ा था। धीरे-धीरे उनके मन में यह विश्वास हो गया कि ये मंच के लोग हमें अपमानित करने नहीं हमारा सहयोग करने आए हैं। इन पचास परिवारों की सूची बनाकर इनके आधार व राशन कार्ड बनवाए गये। कभी सड़क पर भीख मांगने वाले इन परिवारों को मनरेगा और ग्राम पंचायतों की परियोजनाओं के तहत मजदूरी कार्ड दिए गए। जिससे उन्हें अब सरकार द्वारा निश्चित मजदूरी प्रतिदिन मिल जाती है। इतना ही नहीं कार्यकर्ताओं ने इनके बच्चों का सरकारी स्कूलों में प्रवेश भी करवाया।

सोने पर सुहागा तो तब हुआ जब इसी समय शुरू हुई प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ इन परिवारों को भी मिला। पीढ़ियों से भटकती हुई जिंदगी को अपना घर और अपनी छत मिलना कोई आम बात नहीं थी। वर्षों से तरसती हुई आंखों को जीने की एक ठौर मिल गई थी। ◆◆◆

# भगवान भरोसे

एक गांव में एक साधु रहते थे जो दिन-रात कड़ी तपस्या करते थे।

उनका भगवान पर अटूट विश्वास था। एक बार गांव में भयंकर तेज बारिश हुई। बढ़ते हुए पानी को देखकर गांव वाले सुरक्षित स्थान पर जाने लगे। लोगों ने उस साधु को सुरक्षित स्थान पर चलने को कहा, लेकिन साधु ने यह कहकर मना कर दिया कि-'तुम लोग जाओ मुझे मेरे भगवान पर पूरा भरोसा है, वे मुझे बचाने जरूर आएंगे।' धीरे-धीरे पूरा गांव पानी से लबालब हो गया और पानी साधु के घुटनों तक आने लगा तभी वहां पर एक गाड़ी आई और उसमें सवार व्यक्ति ने साधु को गाड़ी में आने के लिए कहा लेकिन साधु ने फिर यह कहकर मना कर दिया-मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं, मुझे मेरा भगवान जरूर बचाने आएगा। गाड़ी वाला वहां से चला गया। पानी बढ़ने लगा और साधु भगवान को याद करने लगा, तभी वहां पर एक नाव आई। बचाव कर्मी ने कहा-'जल्दी से

आइये मुनिवर, मैं आपको सुरक्षित स्थान पर छोड़ देता हूं।' साधु ने कहा-'मेरे भगवान मुझे बचाने जरूर आएंगे, तुम यहां से चले जाओ।' बचाव कर्मी ने कहा-'गुरुवर मुझे अन्य लोगों को भी सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना है, आप समय बर्बाद मत कीजिए, जल्दी आइए। लेकिन साधु ने अपनी जिद नहीं छोड़ी। आखिरकार वह नाविक अन्य लोगों को बचाने के लिए वहां से चला गया। कुछ ही देर बाद साधू बाढ़ में बह गए और उनकी मृत्यु हो गयी। मरने के बाद साधू जब स्वर्ग पहुंचे तो उन्होंने भगवान से कहा-'हे भगवान मैंने कई वर्षों तक कड़ी तपस्या की और आप पर इतना विश्वास किया लेकिन आप मुझे बचाने नहीं आए। भगवान ने कहा-मैंने तुम्हें बचाने का एक बार नहीं बल्कि तीन बार प्रयत्न किया। तुम्हें क्या लगता है-तुम्हारे पास लोगों को, गाड़ी को और नाव को किसने भेजा था? ◆◆◆

# मौका मिलने पर जरूर करे भलाई का कार्य

एक आदमी ने एक पेंटर को बुलाया अपने घर, और अपनी नाव दिखाकर कहा कि इसको पेंट कर दो।

उस पेंटर ने पेंट लेकर उस नाव को लाल रंग से पेंट कर दिया जैसा कि नाव का मालिक चाहता था। फिर पेंटर ने अपने पैसे लिए और चला गया।

अगले दिन, पेंटर के घर पर वह नाव का मालिक पहुँच गया, और उसने उस पेंटर को एक बहुत बड़ी धनराशि का चेक दिया।

पेंटर भौंचक्का हो गया, और पूछा-ये किस बात के इतने पैसे हैं ? मेरे पैसे तो आपने कल ही दे दिए था।

मालिक ने कहा-ये पेंट का पैसा नहीं है, बल्कि ये उस नाव में जो 'छेद' था, उसको रिपेयर करने का पैसा है।

पेंटर ने कहा-अरे साहब, वो तो एक छोटा सा छेद था, सो मैंने बंद कर दिया था। उस छोटे से छेद के लिए इतना पैसा मुझे, ठीक नहीं लग रहा है।

मालिक ने कहा-दोस्त, तुम्हें पूरी बात पता नहीं।

अच्छा मैं तुम्हें विस्तार से बताता हूँ। जब मैंने तुम्हें पेंट के लिए कहा तो जल्दबाजी में तुम्हें ये बताना भूल गया कि नाव में एक छेद है, उसको रिपेयर कर देना और जब पेंट सूख गया, तो मेरे दोनों बच्चे उस नाव को समुद्र में लेकर नौकायन के लिए निकल गए।

मैं उस समय घर पर नहीं था, लेकिन जब लौट कर आया और अपनी पत्नी से ये सुना कि बच्चे नाव को लेकर नौकायन पर निकल गए हैं। तो मैं बदहवास हो गया। क्योंकि मुझे याद आया कि नाव में तो छेद है।

मैं गिरता पड़ता भागा उस तरफ, जिधर मेरे प्यारे बच्चे गए थे। लेकिन थोड़ी दूर पर मुझे मेरे बच्चे दिख गए, जो सकुशल वापस आ रहे थे।

अब मेरी खुशी और प्रसन्नता का आलम तुम समझ सकते हो। फिर मैंने छेद चेक किया, तो पता चला कि, मुझे बिना बताए तुम उसको रिपेयर कर चुके हो, तो मेरे दोस्त उस महान कार्य के लिए तो ये पैसे भी बहुत थोड़े हैं। मेरी औकात नहीं कि उस कार्य के बदले तुम्हे ठीक-ठाक पैसे दे पाऊं। जीवन मे 'भलाई' का कार्य 'जब मौका लगे हमेशा कर देना चाहिए, भले ही वो बहुत छोटा सा कार्य ही क्यों न हो । क्योंकि कभी-कभी वो छोटा सा कार्य भी किसी के लिए बहुत अमूल्य हो सकता है।'

समर्पित उन सभी मित्रों, अपरिचितों को जिन्होने 'हमारी जिन्दगी की नाव' कभी भी रिपेयर की है उन्हें हार्दिक धन्यवाद और सदैव हम भी किसी की नाव रिपेयरिंग करने के लिए हमेशा तत्पर रहें। ◆◆◆

# कोरोना काल और पर्यावरण दिवस

... कर्म सिंह ठाकुर

इस समय पूरी दुनिया वैश्विक महामारी कोरोना वायरस से ग्रस्त है। विश्व की बड़े शक्तिशाली व विकसित देश भी इस महामारी के आगे नत-मस्तक हो चुके हैं। ऐसे में मानव जीवन चारदीवारी में कैद है। सरकार द्वारा भी यही दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं कि यदि अति आवश्यक हो तभी अपने घर से बाहर निकलें अन्यथा अपने आप तथा अपने परिवार को सुरक्षित रखने के लिए कुछ समय तक सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क, सैनिटाइजर तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहकर अपनी रक्षा स्वयं करने की आदत विकसित करें। ऐसी परिस्थिति में मानव को अपना गांव याद आ रहा है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में लीन मानव गांव की ओर आने के लिए उतारु है। शायद इस जानलेवा महामारी के बीच में मानव को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यदि वह अपने गांव में पहुंच गया तो वह इस वैश्विक महामारी से अपने आप को बचा पाएगा। ऐसे में ग्रामीण परिवेश की सुख-सुविधाओं, पर्यावरण, वन्यजीव, पक्षियों इत्यादि का स्मरण स्वत: ही जहान में उत्पन्न हो जाता है।

इस महामारी के बीच में ही 5 जून 2020 का दिन आया जिसे 'अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है। मानव जीवन के ऊपर आए इस संकट की उपज के कारणों तथा भविष्य के लिए उत्पन्न हुए संकट पर वार्तालाप करना समय की मांग बन चुका है। कोरोना वायरस से देश की जनता को बचाने के लिए लॉक डाउन, कर्फ्यू जैसे कारगर तरीके को अपनाना पड़ा। जिसके कारण मानव-जीवन की विभिन्न गतिविधियां प्रभावित हुई। लेकिन प्रकृति को बड़ी राहत मिली। पंजाब के जालंधर क्षेत्र से हिमाचल प्रदेश के धौलाधार की तस्वीरें साफ दिखने लगी। देश के विभिन्न भागों में वन्य प्राणियों, पक्षियों के अद्भुत झुंड सड़कों पर चलते दिखे। वही देश की राजधानी दिल्ली जैसे अत्यधिक जनसंख्या घनत्व वाले केंद्र-शासित प्रदेश में भी स्वच्छता का दीदार संभव हो पाया। वही गंगा नदी जिस पर सरकार करोड़ों रुपए खर्च कर रही थी। लॉकडाउन के दौरान उसकी जलधारा भी स्वच्छ दिखी। देशव्यापी लॉकडाउन से पहले की प्रदूषण की समीक्षा चिंतनीय थी। वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट-2019 के अनुसार, वायु प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिये सबसे गंभीर खतरों में से एक है और विश्व की 90 प्रतिशत से अधिक आबादी असुरक्षित वायु में सांस लेने के लिये विवश है। इस रिपोर्ट के मुताबिक सबसे प्रदूषित देशों में बांग्लादेश के पश्चात् पाकिस्तान मंगोलिया और अफगानिस्तान का स्थान आता है। इस रैंकिंग में भारत 5वें स्थान पर है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2019 में गाजियाबाद विश्व का सर्वाधिक प्रदूषित शहर था। भारत के पड़ोसी देशों में नेपाल 8वें स्थान पर, चीन 11वें स्थान पर और म्यांमार 20वें स्थान पर है। भारत के विभिन्न शहर प्रदूषण की भयंकर चपेट में आ चुके है। ऐसे परिप्रेक्ष्य में इस वर्ष के पर्यावरण दिवस को सेलिब्रेट करने का औचित्य अपने आप में विशेष है। इस दिवस को मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र ने पर्यावरण के प्रति वैश्विक स्तर पर राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने हेतु वर्ष 1972 में की थी। इसे 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में चर्चा के बाद शुरू किया गया था। 5 जून 1974 को पहला विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरुक और संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से हर साल पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। धरती पर लगातार बेकाबू होते जा रहे प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसे कारणों के चलते वर्ल्ड 'एनवायरनमेंट डे' की

शुरूआत हुई थी। हर वर्ष एक नए थीम के साथ पर्यावरण दिवस को मनाया जाता है। वर्ष 2020 में मनाए जाने वाले पर्यावरण दिवस का थीम है-'प्रकृति के लिए समय' (Time for Nature)इसका मकसद पृथ्वी और मानव विकास पर जीवन का समर्थन करने वाले आवश्यक बुनियादी ढांचे को प्रदान करने पर ध्यान दिया जाए। शायद करोना वायरस के समय काल में प्रकृति के साथ समय व्यतीत करने का मानव को काफी लंबे समय के बाद ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ है।

ऐसे में शायद इस वर्ष का पर्यावरण दिवस भी डिजिटल दुनिया के माध्यम से ही देश व प्रदेश के अधिकतर जनता मनाएगी। कोई बुराई नहीं है कि मानव डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रकृति के उत्थान व मानव जीवन को सुगम बनाने के मार्ग को प्रशस्त करें, लेकिन कहीं न कहीं मानव ने अपने सुखों व लालच की पूर्ति के लिए प्रकृति के साथ अनेकों अन्याय किए हैं जो कि मानव के अस्तित्व के लिए ही घातक साबित हो रहे हैं। आज का कोरोना वायरस भी मानव द्वारा प्रकृति के साथ की गई छेड़-छाड़ का ही परिणाम है। जब मानव ने अपनी भूख को खत्म करने के लिए जंगली व वन्य प्राणियों को अपने भोजन में सम्मिलित करने का दुस्साहस किया तो वह यह भूल गया कि कहीं जाने-अनजाने में यही जंगली जानवर उसके जीवन के लिए सबसे बड़ा खतरा बनकर उबर सकते हैं।

यही मानव की सबसे बड़ी भूल आज वैश्विक स्तर पर मानव के अस्तित्व को समाप्त करने को उतारू दिख रही है। कुछ ऐसा ही परिदृश्य कोरोना वायरस के उद्भव में भी देखने को मिलता है। कोरोना वायरस के उत्पन्न होने का सर्वमान्य तथ्य यह है कि यह वायरस चमगादड़ों तथा जंगली जानवरों के सेवन करने के कारण मानव में आया और काफी हद तक यह सत्य भी साबित हुआ है तो ऐसे में मानव को यह सबक प्रकृति ने जरूर सिखाया है कि यदि प्रकृति के साथ अवैध छेड़-छाड़, अप्राकृतिक चीजों का सेवन व दिनचर्या को अपनाएंगे तो स्वत: ही एक दिन नष्ट हो जाएंगे। हर वर्ष भारत में पर्यावरण दिवस चंद पलों के लिए बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। पर्यावरण दिवस के दिन सोशल मीडिया तथा डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पोस्टर, वॉलपेपर, स्लोगन्स, चुटकुले तथा कविताओं के माध्यम से अनेकों पर्यावरण को जागरूक करने वाले संदेश मिल जाते हैं, लेकिन कुछ ही दिनों में यह सब कुछ ईद का चांद हो जाता है। यही हाल सरकारी कालेजों तथा कार्यालयों में पर्यावरण दिवस को दिन देखने को मिलता है। इस आदत को बदलना होगा हमें निरंतर पर्यावरण को बचाने का प्रयास करना होगा यदि पर्यावरण सुरक्षित रहेगा तभी मानव धारा पर अपना जीवन-यापन सुख जीवनयापन सुख समृद्धता से कर पाएगा।

◆◆◆

# आपात काल की आपबीती

... राकेश भारती

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में एमरजेंसी के विरुद्ध माहौल खड़ा करने, अनेकों राजनीतिक व सामाजिक कार्यकर्ताओं को सत्याग्रह के लिए प्रेरित करने में तत्कालीन कांगड़ा के संघ के कार्यकर्ता सुभाष चन्द्र गुप्त का बहुत योगदान रहा है। आपातकाल घोषित होते ही कांगड़ा में इसके विरुद्ध लोगों को जागरूक करने के लिए कई तरह की भूमिगत गतिविधियां प्रारंभ कर दी गई थी। जनसंघ और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं से ताल-मेल और फिर उनको भूमिगत रह अलग-अलग तरह की जिम्मेदारियों से जोड़ इस क्षेत्र में आपातकाल के विरुद्ध अच्छा माहौल तैयार हो गया था। सुभाष चन्द्र गुप्त के नेतृत्व में कांगड़ा में अनेकों विद्यार्थी कार्यकर्ता

भूमिगत रह कर कार्य करते रहे। इनमें कमल कांत मनोचा, प्रवीण शर्मा, राकेश भारती, कमल पाधा, सुनील मनोचा, अशोक कटोच, प्रेम चंद हीर, बिशम्भर दास, अजय शर्मा, राजेंद्र अग्रवाल आदि प्रमुख थे। सामाजिक संगठनों के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में श्री राम कृष्ण अग्रवाल, बसंत कुमार सूद आदि प्रमुख थे। कांगड़ा जिला में अत्यधिक संख्या में कार्यकर्ताओं ने एमरजेंसी के विरुद्ध सत्याग्रह किया और पुलिस यातनाएं सही। धर्मशाला कालेज में पढ़ने वाले राकेश भारती और प्रवीण शर्मा जब भूमिगत रह कर कार्य कर रहे थे तो वे 21अगस्त, 1975 रक्षाबंधन वाले दिन पुलिस के काबू आ गए।

पहले शाहपुर और फिर धर्मशाला पुलिस ने इन दोनों का कुल पंद्रह दिन का पुलिस रिमांड लिया और इन पर भयंकर पुलिसिया अत्याचार हुए। उन दिनों पालमपुर पुलिस स्टेशन में सरदार गुरुदेव सिंह थानेदार नियुक्त थे। इन दोनों से पूछताछ करने के लिए सरदार गुरुदेव सिंह को विशेष रूप से भेजा गया। उसने बाकी पुलसियों के साथ मिलकर कर इन्हें भयंकर यातनाएं दी, इनकी गिरफ्तारी के तुरंत बाद ही कमल पाधा, अशोक कटोच और केशव को भी पुलिस ने पकड़ लिया और उन पर भी पुलिसिया अत्याचार राकेश भारती और प्रवीण शर्मा के साथ धर्मशाला थाने में पुलिस रिमांड के दौरान हुआ। ये सभी कई महीने जेल में बंद रहे। जमानत पर छूटने के बाद प्रवीण शर्मा को फिर शिमला पुलिस पकड़ कर शिमला ले गई और वहां उन्हें पुलिस रिमांड के दौरान फिर भयंकर यातनाएं दी गईं। वे शिमला जेल में कई महीने बंद रहे। जेल से बाहर आने के बाद फिर इन्होंने सुभाष चन्द्र गुप्त की प्रेरणा और संघ की योजना से सत्याग्रह किया।

धर्मशाला पुलिस ने पकड़ लिया और रात्रि को सभी को पुलिस ने बहुत बुरी तरह मारा। अगले दिन कोर्ट में पेश कर पुलिस ने सभी का रिमांड लेने की कोशिश की। इन पांचों ने रात को पुलिस द्वारा किए गए टॉर्चर की जज साहब को पूरी जानकारी दी। जिस पर जज महोदय पुलिस पर बहुत क्रोधित हुए। उन्होनें पुलिस रिमांड देने से मना कर दिया। ये सब इस बार भी कई महीने जेल में बंद रहे। कांगड़ा सहित पूरे हिमाचल प्रदेश से अनेकों कार्यकर्ताओं ने एमरजेंसी के विरुद्ध संघर्ष किया, यातनाएं सही और जेलों में बंद रहे। अनेकों कार्यकर्ता भूमिगत रहकर कार्य कर कष्ट सहते रहे क्योंकि उन्हें संगठन ने अलग से काम में लगाया था। आपातकाल में अनेकों कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग तरह से अनेकों कार्यों में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी। कांगड़ा जिला में भी अनेकों कार्यकर्ताओं ने आपातकाल के विरोध में सत्याग्रह कर गिरफ्तारियां दी थीं और जेलों में बंद रहे थे। अनेकों ऐसे कार्यकर्ता अब इस दुनिया में नहीं हैं। जिनमें सर्वश्री रामेश्वर सिंह कटोच, इंदौरा, रामरतन पटाकू, शाहपुर, रत्न चंद कौंडल, शाहपुर, मियां महिन्द्र सिंह, पालमपुर, वैद्य विश्वानाथ पालमपुर, कैप्टन गोविंद राम पालमपुर, दिवान चंद नगरोटा बगवां, डा0 गुलशन कुमार पालमपुर, नन्दा जी एडवोकेट पालमपुर, आदि ऐसे कुछ नाम हैं जो सभी को स्मरण करते रहना चाहिए। इन्होंने या तो सत्याग्रह किया या फिर पुलिस ने पकड़ लिया और कई महीने जेलों में बंद रहे।

हिमाचल की जयराम ठाकुर सरकार ने आपातकाल में जेलों में बंद रहे लोगों को पेंशन देने के लिए हिमाचल लोकतंत्र प्रहरी सम्मान राशि योजना -2019 बनाई है। देश के अनेक राज्य बहुत पहले से ही ऐसे बंदियों को पेंशन दे रहे हैं। पंजाब में तो ऐसी योजना 1977 में ही शुरू कर दी गई थी। हिमाचल में आपातकाल के बाद कई सरकारें आई पर कभी भी अन्य राज्यों की तरह आपातकाल बंदियों को पेंशन देने बारे नहीं सोचा। अब हिमाचल में पेंशन लगने की तिथि से ग्यारह हजार रुपए प्रतिमाह पेंशन मिलेगी। अन्य राज्यों में यह राशि बहुत अधिक है और अन्य सुविधाएं भी उपलब्ध होती हैं। 23 जून, 2020 के दैनिक जागरण में शांता कुमार के छपे एक वक्तव्य से पहली बार पता चला कि 1953 में डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर में चलाए गए सत्याग्रह में कांगड़ा से शांता कुमार के साथ डरोह के इंद्रमोहन और सलियाना के रामरतन पाल ने भी भाग लिया था। दुर्दैव से व दोनों अब इस दुनिया में नहीं हैं। आपातकाल के उपरोक्त सेनानियों के नाम हमें हमेशा स्मरण करते रहना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को भी उनके बारे में बताना चाहिए ताकि पता लगता रहे कि किन-किन लोगों ने लोकतंत्र की बहाली के लिए सतत् संघर्ष किए हैं। जिनके नाम इसमें छूट गए हैं और किसी को स्मरण हो तो अवश्य ध्यान करावें। ◆◆◆


स्वदेशी स्वावलंबन अभियान/Swadeshi Swavlamban Abhiyan

डिजिटल सिग्नेचर अभियान से जुड़ने के लिए धन्यवाद। कृपया www.joinswadeshi.com पर विजिट करके स्वयं को स्वदेशी वालंटियर के नाते रजिस्टर करें। स्वदेशी-विदेशी वस्तुओं की सूची व अन्य महत्वपूर्ण स्वदेशी विषय एवं समाचार भी इस वेबसाइट पर उपलब्ध है।

Submit another response

# आपातकाल में कुल्लू जनपद

... टेकचंद ठाकुर

बारह सौ वर्षों के निरन्तर संघर्ष के पश्चात् खंडित भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ। देश धीरे-धीरे अपने पांव पर खड़ा होने के लिए अग्रसर होने ही लगा था कि वंशानुक्रम से प्राप्त सत्ता के सत्ताधीशों का निरंकुश चेहरा सामने आने लगा। देश अभी प्रजातान्त्रिक पथ पर कुछ ही कदम चला था, कि तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व0 श्रीमती इन्दिरा गांधी का अंहकार सातवें आसमान पर पहुंच गया था। चाटुकारों की टोली से घिरी इन्दिरा को देश के संविधान और व्यवस्था को मन-माफिक चलाने का गरूर पैदा हो गया। फलस्वरूप 25 जून 1975 को संविधान की धज्जियां उड़ाते हुए पूरे देश में आपातकाल लागू कर दिया गया। यह आपातकाल देश और समाज के किसी भी तरह के विघटन या प्राकृतिक आपदा के कारण नहीं थोपा गया था, बल्कि प्रधानमंत्री के आन्तरिक विघटन और अहंकार के कारण से लगाया गया था। आपातकाल अर्थात् निरंकुश शासन अपने राजनैतिक विरोधियों को कुचलने के लिए था। सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों/आदेशों की अवहेलना करने वाले को तत्काल जेल में ठूंस दिया जाता था। सारे देश को जेल खानों में बदलकर रख दिया गया था, कोई भी व्यक्ति सरकार के खिलाफ एक शब्द भी नहीं बोल सकता था।

चुनावी धांधली के खिलाफ 25 जून 1975 को इलाहाबाद हाइकोर्ट द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी का चुनाव रद्द कर दिया गया और उन्हें 6 वर्षों तक चुनाव लड़ने के लिए आयोग्य घोषित कर दिया। इससे तिलमिला कर भूतपूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल की इकलौती वारिस और जिद्दी स्वभाव की मालकिन श्रीमती इन्दिरा गांधी अपने को संविधान से उपर समझ बैठी, फलस्वरूप देश में आपातकाल लागू कर दिया। 19 महीनों तक पूरे देश में अन्धेर-गर्दी का वातावरण बना रहा। 1971 के युद्ध में पाकिस्तान को दो टुकड़ों में विभाजित कर इन्दिरा गांधी की कीर्ति चहुंदिश फैल चुकी थी। अब तक जनता में इन्दिरा को दुर्गा नाम से भी जाना जाने लगा था। शायद इस तरह के सम्बोधन यह महिला हजम न कर सकी, जिस कारण से तत्कालीन शासन व्यवस्था की निरकुंशता अत्याचारों में परिवर्तित हो गई थी। उस समय राजनैतिक लोगों के अलावा सामाजिक, सांस्कृतिक सभी तरह के संगठनों में काम करने वाले लोगों को भी आपातकाल का दण्ड भुगतना पड़ा। जो भी व्यक्ति देश और समाज हित की बात करता उसे इन्दिरा सरकार अपना विरोधी मान सलाखों के पीछे यातना झेलने के लिए ठूंस देती। आपातकाल में सभी तरह की आवाजों का दमन करना, समाचार पत्र समूहों की लेखनी को कुन्द करना और विशेषकर जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे संगठनों को अपने निशाने पर लेना था।

इस सारे आंदोलन की धुरी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ था। पूरे देश भर में आपात काल का विरोध करने के लिए भूमिगत सभा-समितियां बनीं। जिनका संचालन और मार्गदर्शन संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के हाथों रहा। इस दौरान सभी तरह के आन्दोलनों को कुचलने के कई तरह के काले कानून बनाए गए और उन कानूनों की आड़ में सत्याग्रहियों को अमानवीय यातनाएं दी जातीं। अनेकों कार्यकर्ता भूमिगत होकर अपनी गतिविधियों को अन्जाम देते। पूरे देश में सरकार के प्रति आक्रोश व्याप्त हो चुका था। यहां तक की बड़े-बड़े महानगरों से चलकर दूर-दराज के गांवों अर्थात् बर्फ से ढके ठण्डे पहाड़ों में भी आपातकाल का विरोध करने के लिए राष्ट्र भक्तों ने कमर कस ली थी। संघ के श्रेष्ठ और ज्येष्ठ कार्यकर्ताओं के मार्ग दर्शन और दिशा-निर्देशानुकूल हिमाचल में भी लोक संघर्ष समितियों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र गति से आन्दोलन चला। हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला के प्रमुख कार्यकर्ताओं की टोलियां भी सक्रिय हो गई थी, हालांकि पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण आवागमन और सूचना प्रेषण की कई तरह की दिक्कतें भी थी। कुल्लू जनपद के जनसंघ कालीन प्रमुख कार्यकर्ता स्व: कुन्जलाल ठाकुर और अधिवक्ता श्री सुरेन्द्र खन्ना इस आन्दोलन के अगुवा थे। उस समय बलबीर सिंह राणा एवं प्रेम चन्द गोयल तथा कार्यकर्ता और इन पंक्तियों के लेखक भी

## आवरण

इस आन्दोलन की योजना के मुख्य घटक और इसे क्रियान्वित करने वालों में प्रमुख थे। ये सभी तत्कालीन मुगलिया प्रशासन से बचते-बचाते वेष बदलकर, छुपकर तथा भूमिगत होकर इस काले कानून रूपी आपातकाल से लड़ने के लिए जगह-जगह जन जागरण करते। आन्दोलन में विरोध प्रकट करने के लिए विभिन्न स्थानों से सत्याग्रहियों को प्रेरित कर जत्थों में तैयार किया जाता। स्थानीय परम्परानुसार जत्थे की विदाई वा। यन्त्रों से की जाती। मनाली से निकलने वाले जत्थे की विदाई भी वा। यन्त्रों से की गई। इस जत्थे की अगुवाई दशाल गांव निवासी श्री चन्द्रसैन ठाकुर तथा ठाकुर भोलाराम (संघचालक) कर रहे थे। तथा अन्य सत्याग्रही इस प्रकार थे-उतमचन्द बुरवा, मनाली, गोकुल चन्द, व्यास गोशाला लालचन्द मनाली, ठाकुर गोविन्द राम व फुंचोंग यंगफा सत्रह मील, रामपुर आदि जत्थे में शामिल थे। सत्याग्रहियों में मनाली शहर के चौक पर प्रशासन एवं इंदिरा गांधी के खिलाफ नारे लगाते हुए गिरफ्तारी दी। कटराईं के हुक्म चन्द चौहान का घर इन गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था। जनसंघ के प्रमुख नेता और नीतिकार ठाकुर कुंजलाल की अगुवाई में एक और जत्था कुल्लू शहर में विरोध करने के लिए तैयार हुआ। इसमें श्री जगदेव सिंह कन्याल, लुद्दर चन्द ठाकुर, छियाल, अमरचन्द, अरण्य छाकी, शेर सिंह भारद्वाज गजां, श्री उत्तम चन्द ठाकुर, बुरूआ, श्री खेमराज कारदार, गोकुल चन्द व्यास, गोशाल आदि सत्याग्रहियों ने कुल्लू में अपनी गिरफ्तारियां दीं। बहुत सारे कार्यकर्ता गिरफ्तारी हो गए। अत: भूमिगत होकर आन्दोलन को धार दी संघ के कार्यकर्ताओं ने जिनमें सर्व श्री बलबीर सिंह राणा, प्रेम कुमार गौतम जम्मू के श्री रवि कुमार और वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री ओम प्रकाश दीवान। उस समय सत्याग्रहियों के साथ-साथ आम जनता में भी कुछ नारे लोकप्रिय हो गए थे जैसे-'नई चलणी, नई चलणी, इंदिरा तेरी तानाशाही नई चलणी','भारत माता की जय', 'आपातकाल हटाओ देश बचाओ।' इस तरह के उद्घोषों से आम जनता में भी सहज ही राष्ट्रभाव जागरण हो जाता था। इंदिरा गांधी की हठधर्मिता के कारण उपजी विकट स्थिति में देश-भर में अनेकों राष्ट्र भक्तों ने अपने प्राण न्यौछावर किए। असंख्य घयल हुए और अनेकों गम्भीर रोगों के शिकार हुए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने देश पर थोपी गई इस विपत्ति को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और उस पर विजय पाई। आपातकाल में सभी के कंठों का गान बन गया था यह-

*देश-प्रेम का मूल्य प्राण है,*
*देखें कौन चुकाता है,*
*देखें कौन सुमन शैय्या तज,*
*कंटक पथ अपनाता है।।*◆◆◆



दिव्य हिमाचल 3/4

### सेवा संकल्प समिति ने बढ़ाया मदद को हाथ

निजी संवाददाता, सरकाघाट

कोरोना वायरस की रोकथाम के लिए पहले जनता कर्फ्यू, फिर लॉकडाउन और अब कर्फ्यू लगाए जाने से सबसे ज्यादा प्रवासी व गरीब मजदूर वर्ग प्रभावित हुआ है। इस वर्ग की मदद के लिए सेवा संकल्प समिति ने नगर पंचायत सरकाघाट गोद लिया है और यहां रह रहे प्रवासी मजदूरों की मदद के लिए हाथ बढ़ाए हैं। सर्व प्रथम सेवा संकल्प समिति ने जहां मुख्यमंत्री राहत कोष में एसडीएम के माध्यम से एक लाख का चौक भेजा है। वहीं उसी दिन तीन क्विंटल चावल, आटा दाल और जरूरत का सामान प्रवासी मजदूरों को वितरित कर मिसाल कायम की है। समिति ने दूसरे चरण में प्रवासी मजदूरों को पांच किलोग्राम आटा, पांच किलोग्राम चावल, दो किलोग्राम दाल, एक नमक का पैकेट एक तेल की बोतल प्रति परिवार व प्रति व्यक्ति एक मास्क मुफ्त वितरित किए। बता दें कि सेवा संकल्प समिति द्वारा नगर पंचायत सरकाघाट की सात वार्डों में रह रहे बाहरी राज्यों के करीब तीन हजार मजदूरों को गोद लिया हुआ है। नगर पंचायत में कोई मजदूर भूखा न रहे जिसके लिए सेवा संकल्प समिति ने 14 अप्रैल तक 250 किट राशन की किटें वितरण करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। सेवा संकल्प समिति ने तमाम मजदूरों से आग्रह किया है कि कोई भी व्यक्ति अपने स्थान को छोड़कर न जाए और उनके स्थान पर ही उनको राशन और मास्क उपलब्ध करवाया जाएगा। गौर रहे कि सेवा संकल्प समिति सरकाघाट के 492 सदस्य हैं जो हर माह 100, 200 और 500 रुपए का दान समिति को देते हैं। समिति किडनीएकैंसरएदिल की बीमारी व अधरंग जैसी गंभीर बीमारियों से पीड़ितों को इस वर्ष 23 लाख 70 हजार की राशि वितरित कर चुकी है। वहीं समिति दिव्यांग माता-पिता और बेसहारा गरीब बच्चों की पढ़ाई का खर्चा आदि भी वहन करती आ रही है। इस अवसर पर सेवा संकल्प समिति के सदस्य ध्यान सिंह चौहानए कुंजलाल भारद्वाज, मीडिया प्रभारी ललित जंवाल, राजस्व अधिकारी नंदलाल व सहायक सोनू आदि उपस्थित रहे।



### न्यू शिमला में बांटी खाद्य सामग्री, ज्ञान नहीं राशन बाँटने का समय

स्वतंत्र हिमाचल
शिमला/हितेंद्र शर्मा

कोरोना से कर्फ्यू व लॉकडाउन के दौरान जरूरतमंदों एवं गरीब परिवारों के सामने दो वक्त की रोटी सबसे बड़ी समस्या है। ऐसे में कुछ स्वयंसेवकों एवं संस्थाओं द्वारा जरूरतमंदों की मदद कर मानवता की मिसाल पेश की जा रही है। इस प्रकार की खबरों का उद्देश्य जनजागृति एवं जनकल्याण है। सभी सम्पन्न लोगों को आपदा की इस घडी में प्रशासन की अनुमति से मानव सेवा के लिए सामने आना चाहिए। सोशल मीडिया पर अव्यवहारिक एवं तीखी टिप्पणीयों से समाजिक ताने-बाने को बिगाड़ने की जगह जरूरतमंदो की मदद करनी चाहिए। सोशल मीडिया की तीखी प्रतिक्रियाओं के बावजूद भी स्वयंसेवकों, समाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा जनसेवा का कार्य निरन्तर किया जा रहा है जोकि प्रेरणादायक है। प्रेस क्लब शिमला द्वारा आज इस कड़ी में न्यू शिमला के 14 गरीब परिवारों के 69 लोगों को खाद्य सामग्री वितरित की गई। प्रेस क्लब के अध्यक्ष अनिल भारद्वाज (हिल्ली) के नेतृत्व में पदाधिकारियों ने जरूरतमंद परिवारों में आटा, चावल, दाल, तेल, आलू, प्याज इत्यादि का वितरण किया। इस मौके पर प्रेस क्लब के सदस्य दिनेश अग्रवाल व वरिष्ठ सदस्य आर.एल. डोगरा भी मौजूद रहे।

# योग-यज्ञ कर लिया चीनी बहिष्कार का संकल्प,

... विनोद बंसल

चीन जैसे घातक शत्रु से मुकावला करने हेतु सिर्फ सीमा पर सैनिक ही नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय को लड़ना पडेगा युद्ध। योग दिवस पर यौगिक क्रियाओं, ऑनलाइन हवन-यज्ञ तथा सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास के परीक्षार्थियों को पुरस्कार वितरण के उपरान्त बोलते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने आज कहा कि चीन के अज्ञात शत्रुओं ने हमारे घरों, कार्यालयों, दिनचर्या व यहां तक जेबों में भी घुसपैठ कर ली है। सीमा पर सैनिक की लड़ाई से पूर्व हम सब भारतीयों को चीन का पूर्ण बहिष्कार कर अंदर तक घुसपैठ जमाए शत्रुओं को मारना होगा जिससे उसकी अर्थव्यवस्था के रीड की हट्टी को तोड़ा जा सके। ये विस्तारवादी मानसिकता का शातिर कम्युनिष्ट तभी होश में आएगा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर इस रविवासरीय हवन-सत्संग स्वाध्याय व सम्मान कार्यक्रम का गूगल मीट के माध्यम से आयोजन किया गया। प्रातः 9.00 बजे दर्शनाचार्या श्रीमती विमलेश बंसल आर्या दिल्ली के कुशल ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ तथा कच्छ गुजरात के श्रद्धेय संत स्वामी शांतानन्द सरस्वती जी के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय, सभी दुखों से छूटने के लिए अष्टांग योग की अनिवार्यता एवं यज्ञ के अनुष्ठान की महत्ता बताई गयी। श्री विनोद बंसल जी द्वारा देश के अमर वीर बलिदानियों को श्रद्धांजलि देते हुए सत्यार्थ प्रकाश के परीक्षार्थियों को प्रतीकात्मक रूप में प्रमाण-पत्र वितरण किए। स्वामी शान्तानन्द सरस्वती एवं आचार्य विमलेश बंसल जी के द्वारा लॉक डाउन के दौरान सत्यार्थ प्रकाश नवम समुल्लास का व्हाट्स एप्प के माध्यम से आन लाइन अध्यापन कराया गया था जिसमें अनेक प्रान्तों के महिला, पुरुष, बच्चों व बुजुर्गों ने पूरे मनोयोग से भाग लिया तथा अंत में लिखित परीक्षा भी दी थी। परीक्षा में नई दिल्ली की श्रीमती आशा भटनागर ने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए। कार्यक्रम का संचालन श्रीनगर (जम्मू कश्मीर) से आचार्य श्री अनुज आर्य ने किया।◆◆◆

# भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के अवरोधों को दूर किया जाए: विहिप

... विनोद बंसल

विश्व हिन्दू परिषद् (विहिप) केन्द्रीय महामंत्री श्री मिलिंद परांडे ने कहा है कि गत सैकड़ों वर्षों से अनवरत रूप से पुरी में निकाली जाने वाली भगवान श्री जगन्नाथ की परम्परागत रथ यात्रा इस वर्ष भी निकाली जानी चाहिए। कोविड महामारी के संकट काल में भी सभी नियमों तथा जन स्वास्थ्य सम्बन्धी उपायों के साथ यात्रा निकाली जा सकती है। यात्रा की अखण्डता सुनिश्चित करने हेतु कोई मार्ग अवश्य ढूंढना चाहिए। आज की परिस्थितियों में यह अपेक्षा कदापि नहीं है कि यात्रा में दस लाख भक्त एकत्रित हों। उन्होंने माननीय सर्वोच्च न्यायालय से अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने की प्रार्थना भी की। विहिप महामंत्री ने कहा कि कोरोना महामारी के संकट काल में भी, जन-स्वास्थ्य की रक्षा करते हुए, प्राचीन परम्परा की अखण्डता हेतु, ता सुनिश्चित करने उचित मार्ग निकालना, राज्य सरकार का दायित्व है। राज्य सरकार अपने इस दायित्व के पालन में पूरी तरह विफल रही है। वास्तव में उड़ीसा सरकार माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष इस सम्बन्ध में सभी पहलू ठीक से नहीं रख पाई। श्री परांडे ने यह भी कहा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय को इस सम्बन्ध में निर्णय लेने से पूर्व सभी सम्बन्धित पक्षों को सुनना चाहिए था। कम-से-कम पुरी के शंकराचार्य गोवर्धन पीठाधीश्वर पूज्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज के साथ मंदिर के ट्रस्टियों तथा यात्रा प्रबंधन समिति को तो सुना ही जाना चाहिए था। भगवान के रथ को प्रतीकात्मक रूप से हाथियों, यांत्रिक सहायता या कोविड परीक्षित पूरी तरह से स्वस्थ व सक्षम सीमित सेवा इतों के माध्यम से भी खींचा जा सकता है। यात्रा की इस पुरातन महान परम्परा के टूटने पर मंदिर के धार्मिक विधि विधानों में व्यवधान उपस्थित होने की सम्भावना अनेक भक्तों ने व्यक्त की है। ◆◆◆

# पठाअ चित्रकारी

... सुनीला ठाकुर

देवभूमि के नाम से विख्यात कुल्लू अनेक विशेषताओं के कारण हिमाचल प्रदेश में अपना अलग स्थान रखता है। यहां देव संस्कृति व लोक संस्कृति का अद्‌भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। यहां के मेले, त्यौहार, रीति-रिवाज, परम्पराएं, पहनावा, देव संस्कृति, लोक नृत्य, लोक गीत (श्रम गीत, देव गीत, वीर-गाथा गीत, संस्कार गीत) लोक नाट्य, लोक कलाएं, लोक वा। यन्त्र अपना विशेष स्थान रखता है।

कुल्लू की पारम्परिक लोक कलाएं अन्य क्षेत्रों से भिन्न तथा विचित्र रूप लिए हुए है। ऐसी ही एक लोक कला है : पठाअ चित्रकारी। धार्मिक स्थलों तथा शुभ अवसरों जैसे विवाह-शादी, जन्मदिन आदि पर यह चित्रकारी देखने को मिलती है। इस चित्रकारी को महिलाएं ही करती हैं जिन्हें इस विधा का विशेषज्ञ समझा जाता है। इस चित्रकारी में पठाअ जो देवदार के पेड़ से गिरने वाली तितनियों से प्राप्त होता है का प्रयोग किया जाता है। सर्दियों में देवदार के पेड़ से पीला पराग झड़ता है जिसे कुल्लू में पठाअ कहा जाता है। इस पठाअ को दही अथवा लस्सी, दूध, गौंत्र, घी तथा पानी आदि पांच पदार्थों में घोल कर रंग तैयार किया जाता है तथा हाथ की अनामिका उंगली से चित्र बनाए जाते हैं। लस्सी या दही जितनी अधिक खट्‌टी होगी उतना ही बढ़िया रंग उभर कर आएगा। पहले के समय में महिलाओं द्वारा जंगल से पठाअ लाना एक उत्सव जैसा होता था। साधारण सी दिखने वाली इस चित्रकारी का बहुत महत्त्व है। इस चित्रकारी को देखने पर यह अनुमान लगाना कठिन होता है कि इसमें किस रंग का प्रयोग किया गया है।

शुभ अवसरों पर इस चित्रकारी के माध्यम से देवी-देवताओं का आह्वान किया जाता है। आमतौर पर कुल्लू में शादी-ब्याह में घर के कोने में देवताओं की स्थापना की जाती है। उन कोने में लाल हरमूंजी से रंगने के उपरांत उस पर पठाअ के रंगों से शुभ आकृतियां जैसे देवी-देवताओं के चित्र, पालकी आदि चित्रित की जाती है तथा सजावट के लिए चारों ओर बेल-बूटे बनाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त मंदिरों के दरवाजों पर इस कला का प्रयोग देखने को मिलता है। दरवाजे पर इसे चित्रित करना शुभ एवं पवित्र माना जाता है। दरवाजे पर प्रायः गुड़िया की आकृतियां तथा बेल-बूटे बनाए जाते हैं। इसी प्रकार जब गांव में कोई मेला होता है तो लोग सजावट के लिए अपने घरों के दरवाजों पर इसी प्रकार की चित्रकारी करते हैं। जब भी यह कार्य किया जाता है तो किसी शुभ कार्य का संकेत होता है।

◆◆◆

# जन्मजात देशभक्त थे डॉ. हेडगेवार

... हरिराम धीमान

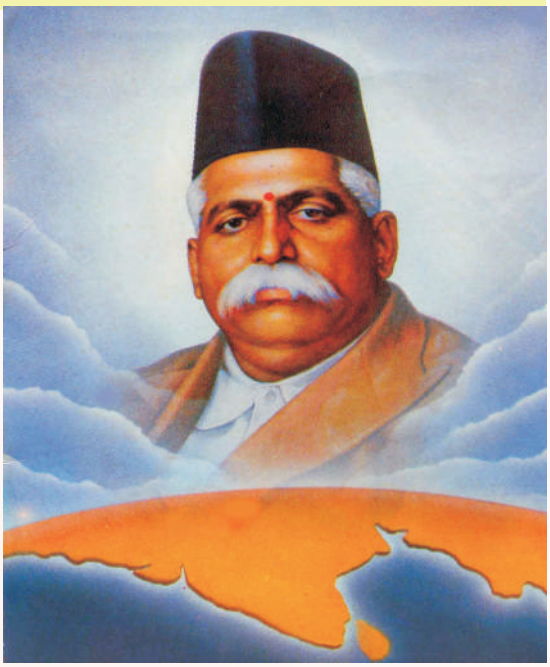

कोई 35 साल का युवा जिसने डॉक्टरी की पढ़ाई की हो, सरकारी सरकारी नौकरी करने की बजाय छोटे छोटे बालकों के साथ खेलना शुरू कर दे तो लोग उसे पागल नहीं तो और क्या कहेंगे? डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने भी जब 1925 में विजय दशमी के दिन छोटे-छोटे बालकों को इकठ्ठा कर संगठन करने के लिये संघ की स्थापना की तो लोगों ने उनके बारे में भी यही कहा था कि ज्यादा पढ़ाई करने के कारण इनका दिमाग खराब हो गया है। लोग उनका उपहास करने लगे, लेकिन डॉक्टर साहब ने किसी की परवाह नहीं की और उस का परिणाम आज संसार के सामने है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है और लोगों के लिए शोध का विषय बना हुआ है कि आखिर क्या रहस्य है इसकी कार्य पद्धति का, लेकिन एक बात सत्य है कि डॉ.हेडगेवार जन्मजात देश भक्त थे और दृढ़ निश्चयी थे। 'होनहार वीरवान के होत चिकने पात' वाली कहावत डॉक्टर जी के मामले में सही उतरती है। इनमें लक्षण बाल्यकाल से ही नजर आने लगे थे। इसको प्रमाणित करने के लिए इनके जीवन की कुछ घटनाओं का अवलोकन ही पर्याप्त है। पहली घटना 22 जून 1897 की है जब उनकी आयु केवल 8 वर्ष की थी। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण के 60 वर्ष पूरे होने के अवसर पर देश में सभी स्कूलों में मिठाईयां बांटी जा रहीं थी। बालक केशव के स्कूल में भी मिठाई बांटी गई। लेकिन केशव ने यह कह कर मिठाई फेंक दी कि वह हमारी महारानी नहीं है, हम किस बात की खुशी मनाएं। दूसरी घटना सन 1901 की है। इंग्लैंड में एडवर्ड सप्तम् का राज्यारोहण हुआ तो उसकी खुशी में नागपुर में भी आतिशबाजी की गई तो उन्होंने कहा कि विदेशी राजा के राज्यारोहण की खुशी मनाना हमारे लिए शर्म की बात है। तीसरी घटना नागपुर के सीताबर्डी किले पर लहराते यूनियन जैक के बारे है। इसे उखाड़ फेंकने की योजना अपने मित्रों से बनाई। अपने गुरूजी के घर से किले तक सुरंग खोदने का काम शुरू किया ताकि यूनियन जेक तो उतार फेंका जाये। डेढ़ दो कि. मी. लम्बी सुरंग खोदना बच्चों का खेल नहीं था, इसलिए जब बात खुली तो बड़ों ने डांट-फटकार लगाई। चौथी घटना 1907 की है जब केशव नील सिटी हाई स्कूल में पढ़ते थे। पूरे देश में वन्दे मातरम् आन्दोलन जोरों पर था। उन्हीं दिनों अंग्रेज सरकार ने रिसले सर्कुलर निकाला था जिसमें वंदे मातरम् के उद्घोष पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। उनके स्कूल में अंग्रेज निरीक्षक के आने का समाचार मिला तो केशव ने अपने साथियों से मिलकर गुप्त योजना बनाई कि निरीक्षक का स्वागत वंदे मातरम् से किया जाए। ज्यों ही निरीक्षक केशव की कक्षा में आए, सभी ने एक स्वर में वंदे मातरम् के उद्घोष से उनका स्वागत किया। निरीक्षक दूसरी कक्षा में गए वहां भी इसकी पुनरावृत्ति देखने को मिली। जिस भी कक्षा में निरीक्षक गए, वन्दे मातरम् से उनका स्वागत हुआ। गुस्से से लाल- पीले निरीक्षक बिना कुछ कहे विद्यालय से चले गये तथा बाद में विद्यालय की प्रबंध समिति को दोषी छात्रों को दण्डित करने का आदेश दिया। केशव ने यह योजना इतने गोपनीय तरीके से बनाई थी कि किसी को आभास तक नहीं हुआ। विद्यालय की प्रबंध समिति के अध्यक्ष ने छात्रों से आग्रह किया कि वे क्षमा मांग लें लेकिन सभी छात्रों ने वन्दे मातरम् के जयघोष से अपना मंतव्य बता दिया। फलस्वरूप विद्यालय लगभग दो महीने तक बंद रहा। स्कूल प्रबंधन की शर्त थी कि सभी विद्यार्थी माफी मांगें तभी उन्हें विद्यालय में प्रवेश दिया जायेगा। सभी विद्यार्थियों ने माता-पिता के दबाव में आकर क्षमा मांग ली लेकिन बालक केशव ने क्षमा मांगने से मना कर दिया जिसके फलस्वरूप उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। ये चार घटनाएं यह साबित करने के लिए पर्याप्त हैं कि वे जन्मजात देश भक्त थे।

उनकी शेष स्कूली शिक्षा राष्ट्रवादी शिक्षाविदों द्वारा चलाए जा रहे विद्यालय से हुई। अब उन पर क्रांतिकारियों की पैनी नजर थी। उनको योजनाबद्ध तरीके से कलकत्ता के नेशनल मेडिकल कालेज में प्रवेश दिला कर भेजा गया और शीघ्र ही वे क्रांतिकारियों की संस्था अनुशीलन समिति के सक्रिय एवं विश्वासपात्र सदस्य बन गये तथा वे बंगाल व मध्य प्रांत के क्रांतिकारियों के बीच कड़ी का काम कर रहे थे। 1910 और 1915 के मध्य काफी

मात्रा में पिस्तौल और अन्य हथियार कलकत्ता से नागपुर भेजे गये। जब वे स्वयं भी नागपुर आते, अपने साथ छुपाकर हथियार लेकर आते थे।

मेडिकल की पढाई पूरी करने के बाद जब नागपुर आये तो निकट सम्बन्धियों और मित्रों ने उन्हें विवाह कर लेने का सुझाव दिया लेकिन डॉक्टर जी ने अपने मित्रों एवं संबंधियों को अपना फैसला सुनाया कि वे आजीवन अविवाहित रहकर राष्ट्र का कार्य करने के लिए कटिबद्ध हैं। उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेना शुरू कर दिया था लेकिन उनके मन में एक विचार चल रहा था कि आखिर ऐसी क्या परिस्थितियां थी जिनके कारण हमारा देश जो कभी विश्व गुरु चलाता था, सदियों से परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा गया। लगातार चिंतन से वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जब भी यहां आक्रमणकारी लोग सफल हुए, अपने पराक्रम से नहीं बल्कि हमारे समाज में से भीतरघात के कारण सफल हुए। इसके साथ ही उनके मन में यह भी चल रहा था कि यदि किसी तरह हम स्वतंत्र हो भी गए तो क्या गारंटी है कि हम दोबारा से गुलाम नहीं होंगे। इसलिए वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जब तक यहां के पुरूषों को संगठित नहीं किया जाता, तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है। इतने गहन चिंतन के बाद 1925 में विजय दशमी के दिन अपने पुराने सहयोगियों के साथ देश और युवाओं को संगठित करने के लिए एक संगठन का शुभारम्भ किया। यद्यपि उन्होंने संगठन की स्थापना के लिए अपने पुराने सहयोगियों को विश्वास में लिया था लेकिन अपने कार्य का आधार छोटे-छोटे बच्चों को बनाया और और दैनिक शाखा के माध्यम से खेल-खेल में उन्हें संस्कार देकर अपनी इच्छा के अनुसार उनका निर्माण किया क्योंकि बाद में यही बालक देश के विभिन्न हिस्सों में जाकर संघ के कार्यकर्ता बने। डॉक्टर जी ने इन बालकों को कभी कोई आदेश नहीं दिया, बल्कि स्वयं का उदाहरण उनके सामने प्रस्तुत करके उन्हें प्रेरणा दी। 15 वर्षों तक स्वयं को तिल-तिल जलाकर संगठन को अपने रक्त से सींचा।

मई 1940 में नागपुर में संघ का एक महीने का प्रशिक्षण वर्ग लगा हुआ था तो वे गंभीर रूप से बीमार थे। 9 जून 1940 को वे बीमारी की हालत में ही वर्ग में आये और करीब 1500 स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा था 'संघ की दृष्टि से यह वर्ष बहुत सौभाग्यशाली है। आज मैं अपने सामने हिन्दू राष्ट्र की लघु प्रतिमा देख रहा हूं'। उन्हें अपनी बढती बीमारी के कारण मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। 20 जून को उन्होंने गुरु जी (गोलवलकर) जी को पास बुलाकर अन्य कार्यकर्ताओं के सामने कहा कि अब संघ का सम्पूर्ण कार्य आपको ही देखना है। 21 जून 1940 को प्रात: करीब साढ़े नौ बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। आज बेशक डॉक्टर जी देह रूप में हमारे मध्य नहीं है, परन्तु संगठन में उनकी आत्मा आज भी बसती है। ◆◆◆

# हरियाणा में छह मुस्लिम परिवारों ने अपनाया हिंदू धर्म

जागरण संवाददाता, जींद

- परिवार के बुजुर्ग को दफनाने की बजाय किया अंतिम संस्कार
- नौजवानों की राय पर पूर्वजों के धर्म में वापसी की घोषणा की

हरियाणा के जींद जिले के दनौदा कलां गांव में छह मुस्लिम परिवारों ने हिंदू धर्म में वापसी की है। शनिवार को जब उनके परिवार के एक बुजुर्ग नेकाराम का निधन हुआ, तो सबने शव को दफनाने के बजाए अंतिम संस्कार किया। साथ ही फिर से अपने पूर्वजों के धर्म में वापसी की घोषणा कर दी। वैसे भी इस्लाम अपनाने के बाद भी ये लोग अपना नामकरण फारसी के बजाय हिंदी शब्दों में करते थे।

दनौदा कलां गांव निवासी मनीर मिरासी परिवार के रमेश कुमार ने बताया कि मुस्लिम बादशाह औरंगजेब के समय उनके पूर्वज हिंदू थे। औरंगजेब के अत्याचारों से तंग आकर परिवार की सुरक्षा के लिए पूर्वजों ने मुस्लिम धर्म अपना लिया था। अब सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से परिवार के शिक्षित बच्चों को जब असलियत का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने पूरी सहमति के साथ हिंदू धर्म में वापसी का विचार बनाया। उन्होंने हिंदू धर्म की परंपरा अनुसार जनेऊ भी धारण कर लिया है।

### अपनी इच्छा से अपनाया हिंदू धर्म

गांव के सरपंच पुरुषोत्तम शर्मा ने बताया कि मनीर मिरासी के इन छह मुस्लिम परिवारों ने बिना किसी दबाव और अपनी इच्छा से हिंदू धर्म में वापसी की है। पूरा गांव उनके इस फैसले का सम्मान करता है।

# जूम एप सुरक्षित नहीं, भारत की साइबर एजेंसी ने चेताया

**कहा-इस पर डाटा और डिवाइस सुरक्षित नहीं**

बंगलूरू। लॉकडाउन के समय बच्चों की ऑनलाइन स्कूल क्लासेज से लेकर बड़ों के ऑफिस की वर्चुअल बैठकों तक में 'जूम' एप का खूब उपयोग हो रहा है। इस एप को देश के गृहमंत्रालय के साइबर कोऑर्डिनेशन सेंटर (साईकोर्ड) ने असुरक्षित प्लेटफॉर्म बताया है।

साईकोर्ड ने 16 पेज की एडवाइजरी जारी की है। वहीं जूम की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। इससे पहले अप्रैल में ही जूम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी व संस्थाक एरिक यूआन ने सभी माफी मांगते हुए कहा था कि उपयोगकर्ता और वे खुद भी इस एप से अपेक्षित निजता और सुरक्षा महसूस नहीं करते हैं। साथ ही कहा था कि कंपनी इन कमियों को तलाशने और सुधारने में जुटी है। एजेंसी

### खतरा और बचाव

- सुरक्षा सेटिंग में बदलावों के लिए कहा गया है। इससे एप के जरिए वर्चुअल कॉन्फ्रेंस रूम और कंप्यूटर व मोबाइल आदि डिवाइज पर साइबर नहीं हो सकेगा।
- वर्चुअल बैठक की आईडी छिपाने व पासवर्ड लगाने के लिए भी कहा गया है।
- जूम एप को पिछले वर्ष तक 1 करोड़ लोग उपयोग कर रहे थे। महामारी के बाद 20 करोड़ लोग एप का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- अमेरिकी सीनेट ने हाल में अपने सदस्यों को जूम उपयोग न करने की सलाह दी

# गाय की प्रजातियां

... मधुकर चतुर्वेदी

भारत के किस राज्य में गाय की कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं, भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि और पशुपालन पर आधारित है, जिसमें दूध उत्पादन की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत में लगभग 146.31 मिलियन टन दूध का वार्शिक उत्पादन होता है। यहां, हम भारत में पायी जाने वाली गायों की विभिन्न प्रजातियों की सूची दे रहे हैं। भारत के किस राज्य में गाय की कौन सी प्रजातियां पाई जाती हैं

**गिर**- औसत दुग्ध उत्पादन- 20. 0-60.0 किलो, भौगोलिक सीमा सौराष्ट्र, गुजरात-विशेषताएं यह प्रजाति भारत में पायी जाने वाली गाय की प्रजातियों में उच्चतम कोटि की प्रजाति मानी जाती है।

**साहीवाल**-औसत दुग्ध उत्पादन- 20. 0-40.0 किलो, भौगोलिक सीमा पंजाब, उत्तर प्रदेश और हरियाणा। इसकी पहचान मुख्य रूप से इसके लाल रंग से की जाती है।

**लाल सिन्धी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 11. 0-26.0 किलो, भौगोलिक सीमा यह मूलत: पाकिस्तान के सिंधी सूबे में पाई जाताी है। यह मूलत: लाल रंग की होती है और साहीवाल प्रजाति की गायों की तुलना में दूध उच्चतम कोटि का होता है।

**राठी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 18.0-35.0 किलो, भौगोलिक सीमा बीकानेर राजस्थान, हरियाणा और पंजाब।

**थारपाकर**-औसत दुग्ध उत्पादन-10.0-20. 0 किलो, भौगोलिक सीमा: सिंध पाकिस्तान, कच्छ, जैसलमेर, जोधपुर, ''सफेद सिंधी'' ''ग्रे सिंधी'' और ''थीरी'' के नाम से भी यह प्रजाति जानी जाती है।

**देओनी**-औसत दुग्ध उत्पादन-6.8-12.9 किलो, भौगोलिक सीमा मराठवाडा, महाराष्ट्र, गायत्री, डोंगरी, वन्ने, वाद, बालनक्य और श्वेरा इस गाय की नस्ल का दूसरा नाम है।

**हरियाणवी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 10. 0-20.0 किलो, भौगोलिक सीमा हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान। इस प्रजाति की गाय का दूध उच्चतम कोटि का होता है।

**कांकरेज**-औसत दुग्ध उत्पादन- 15-40 किलो, भौगोलिक सीमा भुज, उत्तर गुजरात और राजस्थान, वादाद या वागेड, वागिया, तालाबाड़, नगर, बोनैनी इस प्रजाति के प्रसिद्ध नाम हैं। इनका दूध बुखार, गर्मी, तनाव, संक्रामक गर्भपात और तपैदिक के इलाज में बहुत उपयोगी होता है।

**ओंगोल**-औसत दुग्ध उत्पादन- 7.0-7.98 किलो, भौगोलिक सीमा गुन्तुर, ओंगोल आंध्र प्रदेश।

**लाल कंधारी**- औसत दुग्ध उत्पादन- 5. 0-5.8 किलो, भौगोलिक सीमा मराठवाडा, महाराष्ट्र। यह आमतौर पर कम दुधारू गाय होती है।

**निमाड़ी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 6.0-9.5 किलो, भौगोलिक सीमा खांडवा, मध्य प्रदेश। इस प्रजाति की गाय तांबे के रंग की होती है और त्वचा पर सफेद धब्बे होते हैं।

**मालवी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 6.7-12.7 किलो, भौगोलिक सीमा मध्य प्रदेश और राजस्थान।

**डांगी**- औसत दुग्ध उत्पादन- 1.75-8.0 किलो, भौगोलिक सीमा पश्चिम महाराष्ट्र। इस प्रजाति के गाय के शरीर पर असमान रूप से लाल या काले धब्बे के निशान होते हैं।

**खिल्लारी**-औसत दुग्ध उत्पादन- 2.40-5. 5, यह भौगोलिक सीमा दक्षिण महाराष्ट्र और उत्तरी कर्नाटक। इनको मांदेषी शिकारी और थिलर के नाम से भी जाना जाता है।

**अमृतमहल**- औसत दुग्ध उत्पादन- 10. 0-12.0 किलो, भौगोलिक सीमा कर्नाटक। इनको 'दोद्दादाना', 'जवारी दाना' जवरी दाना और नंबर दाना' नाम से भी जाना जाता है।

**हल्लीकर**-औसत दुग्ध उत्पादन- 2.27-11. 3 किलो, भौगोलिक सीमा हसन, म्यसूर और तुम्कुर कर्नाटक, इस प्रजाति की गाय का दूध पतला होता है तथा ये औसत दर्जे की दुधारू होती हैं। यह मानसून-पूर्व वर्षा भारत के किसानों तथा बाजारों के लिए वरदान है।

**कंगायम**- औसत दुग्ध उत्पादन- औसत दुग्ध उत्पादन- 5.0-5.5 किलो, भौगोलिक सीमा कोयंबटुर तमिलनाडू।

**सीरी**- औसत दुग्ध उत्पादन-4.5-8.0 किलो, भौगोलिक सीमा भारत में यह दार्जिलिंग और सिक्किम के आस-पास के पहाड़ी इलाकों में पायी जाती हैं।

**बाचौर**-औसत दुग्ध उत्पादन-2.5-6.3 किलो, भौगोलिक सीमा सीमामढ़ी, बिहार। यह हरिया प्रजाति से मिलती-जुलती प्रजाति है तथा औसतन कम दूध देती है।

**मेवाती**- औसत दुग्ध उत्पादन 9.5 किलो, भौगोलिक सीमा राजस्थान। यह औसतन कम दूध देती हैं तथा ये हरीया, गिर, कांकरेज और मालवी प्रजाति के गाय से मिलती-जुलती हैं।◆◆◆

## बाधाओं से हार नहीं

कोरोना का संहार यही अब।।
बैंक कर्मी और मीडिया,
एकजुटता के अवतार में अब।।
डाक्टर, स्वच्छता कर्मी, प्रशासन
कोरोना को नहीं रहने देंगे अब।।।
धारे देवताओं ने रूप अनेक तो
हिमाचल हो रहा कोरोना मुक्त अब।।
विश्व देख रहा भारत को आशा से
लॉक डाउन कुन्जी दिखा प्रभाव अब।।
जनमानस के आत्मबल से गूंज रहा स्वर
आपदा विपदा में संघे शक्ति मूलमंत्र अब।।
विजय पताका लहरा विश्व में
भारत विश्व गुरु बनकर ही रहेगा अब।।
कोरोना काल के संकट में
मानव का बदला व्यवहार अब।
सोच रहा, रोटी कपड़ा और
मकान ही जीने का आधार अब।
सूरज और धरती आकाश हवा
का मानवता पर भार अब।।
मुक्त होना इस कर्ज से हमें
कर रहा हर प्राणी संकल्प अब।।
बाधाओं से हार नहीं अब
कोरोना का संहार यही अब।।

## मेरा संगी

कांपते हुए मेरे लफ्जों को जरा पहचानो,
उनमें जो दर्द है, उसको जरा संभालो।
तुम कहते हो न, तुम्हे क्या दर्द है ?
तो जरा देखो मेरे अंतर्मन में,
हंसती मुस्काती मेरी पीड़ा को।
मैं फिर भी टूटता नहीं, कभी बिखरता नहीं,
मैं मुस्काता हूं उस पीड़ा के साथ
भले वो दर्द दे मुझे लाख। कभी-कभी मेरा दर्द भी
बेहद रोता है चीखता है चिल्लाता है।
देखकर मुझको मुसकुराते। बोलता है मेरा संगी दर्द
देकर दर्द खुदा ने तुझे नहीं मुझको ही
तोड़ा है अरोड़ा है।

**राजीव डोगरा विमल, कांगड़ा,हि.प्र.**

## एक और सुबह

और संदेश
सूरज गतिमान
निकल आया
बावजूद बादल
रोके खड़े,
जिद सूरज की
जो पुरजोर कोशिश
कर दे रहा ताप।।
जीवित होने का परिणाम
शरीर सहित
उठ गई
सोई चेतना।।
कुछ और अभी
जागने को
स्कूल जाते
बच्चों की कतार।।
इंतजार है
रिज पर घोड़े
की सवारी का।।
पेड़ के नीचे
पुड़िया बेचने वाले का।।
हवा घर की आराम पुर्सी
रक्तदान शिविर का।।।
हवा में बुलबुले उड़ाते
बच्चों का शोर का।।
रंग बिरंगे परिधान पहने
सैलानियों के सैलाब का।।
चर्च और जाखू मंदिर में
पर्यटकों के आगमन का।।
बैंच पर बैठे
नवविवाहित जोड़ों का।।
किताब पढ़ते विद्यार्थियों का।।
आराम फरमाते बुजुर्गों का।।

**भारती कुठियाला, शिमला**

## मेरा किसी से

कोई रिश्ता नाता नहीं ,
मैं केवल सत्य
और सच्चाई का दूत हूं,
जब-जब धर्म की हानि होती है,
तब तब मैं पृथ्वी पर
अवतरित होता हूं ,
कभी मैं राम बनकर
रावण का वध करता हूं ,
तो कभी कृष्ण बनकर
कंस जैसे अत्याचारियों का दमन करता हूं,
कभी मैं मीरा बनकर
भक्ति रस में खो जाता हूं,
तो कभी मैं नानक बनकर
जगत में मानवता का संदेश देता हूं ,
तो कभी मैं गोविंद सिंह बनकर
शत्रुओं को खुदेड़ता हूं ,
तो कभी अल्लाह का बंदा बन कर
अल्लाई नूर बांटता हूं ,
फिर भी इस बुद्धिजीवी युग के लोग
मुझे मिथ कहते हैं,
मैं मिथ नही,
केवल मैं ही सत्य हूं ,
और मैं ही सत्य रहूंगा

**अमित कुमार**
**गुरू नानकदेव विवि. अमृतसर**

## वीर असां दे चतरे नी

देस्से जो के खतरे जी,
औंणा दे तू बतरे जी?
बदला लेई लैणा ऐं,
वीर असां दे चतरे जी।
शामत आई चीन्ने दी,
दौड़ी पे दे अतरे जी।
कैणजो फंग लुआरा दे,
वैरी दे पर कतरे जी?
जै-जैकार शहीदां दी,
रंगी ते हन पतरे जी।
होणी जित्त नवीने दी,
खून्ने दे हर कतरे दी।
सुच्चा-कड़वा कान्नी दा
मिठा ब्हौत्त जवान्नी दा,
सुच्चा-कड़वा कान्नी दा।
मेरा भाई कविया जी,
पक्क असूला आन्नी दा।
दूर-दरेढा दुस्सी जा,
डील्ला जिंह्यां धन्नी दा।
भारत मां ते बढा नीं,
मुन्नू कोई मान्नी दा।
देस्से तांई सोच्चा दा,
वगत कुथू मनमान्नी दा?
मौलक छंद 'नवीने' दा,
ताजा शब्द विआन्नी दा।

**नवीन हल्दूणवी, जसूर, कांगड़ा**

# परिवार का प्यार-दुलार मिले तो जिंदगी हो जाए खुशहाल

... चयनिका निगम

मुझे दादी की सिखाई हुई बातें आज भी याद हैं और वो नानी के हाथ की मीठी पूरियां। आह!... इतना ही नहीं और भी बहुत कुछ है, जो हमारे ग्रैंड पेरेंट्स हमें गाहे-बगाहे सिखा जाते हैं। पर अब वक्त ऐसा आ गया है कि अधिकांश बच्चे अपने माता-पिता के साथ दूसरे शहरों में रहते हैं और दादी-दादी या नाना-नानी से साल में महज कुछ दिनों के लिए ही मिल पाते हैं। अपने बच्चे के अच्छे भविष्य के लिए और उन्हें जिंदगी जीने का सही तरीका सिखाने के लिए जरूरी है कि आप उनकी जिंदगी में उनके दादा-दादी और नाना-नानी के लिए खास जगह बनाएं।

**परिवार का अहसास**

परिवार का अहसास तब होता है, जब सच में सारा परिवार एक साथ हो। पर, आज के जमाने ऐसा बमुश्किल हो पाता है। एकल परिवार का चलन बढ़ चुका है। वहां भी अमूमन मां-पापा दोनों कामकाजी होते हैं। बच्चा स्कूल और ट्यूशन के बीच ही व्यस्त रहता है और दादा-दादी कहीं दूर किसी दूसरे शहर में अकेले जिंदगी जीने के लिए मजबूर होते हैं पर, अगर थोड़ी-सी कोशिश और सामंजस्य के साथ आप इस स्थितियों को बदलने में सफल हो जाती हैं और बच्चे के दादा-दादी को भी अपने साथ रहने के लिए बुला लेती हैं तो बच्चे की जिंदगी कई गुना खुशनुमा हो जाएगी।

**साथ रहेंगे, खुश रहेंगे**

साइकोलॉजिस्ट डॉ. स्मिता श्रीवास्तव कहती हैं कि बड़े परिवार का मतलब है, चौबीसों घंटे हर किसी का साथ। ऐसे में बच्चे के मन में अकेले पन की भावना नहीं आती है और टेंशन या परेशानी के वक्त भी किसी न किसी का साथ मिल जाता है।

**पुरानी बातें और यादें**

परिवार से जुड़ी, माता-पिता से जुड़ी और बच्चों के खुद के बचपन से जुड़ी, सारी पुरानी बातें बच्चों को ग्रैंड पेरेंट्स से ही तो पता चलती हैं। उन्हें पता चलता है कि उनके परिवार की खासियत क्या है, किसने क्या गलती की या किसने कैसे परिवार का नाम रोशन किया। ये बातें उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं और आत्मविश्वास भी देती हैं। माता-पिता कामकाजी होते हैं तो बच्चों को कंप्यूटर, मोबाइल आदि का सहारा मिल जाता है, जबकि ग्रैंट पेरेंट्स का साथ उन्हें यह सिखाता है कि मशीन लोगों की जगह नहीं ले सकती है।

**सीखेंगे नई-पुरानी सारी बातें**

दादा-दादी, नाना-नानी और माता-पिता, इन सबका साथ बच्चों को मिलने का मतलब है कि उन्हें पुराने और नए दोनों पीढ़ी का साथ मिल रहा है। मतलब उन्हें हवाई जहाज के बारे में माता-पिता बता रहें हैं, तो बैल गाड़ी के बारे में ग्रैंड पेरेंट्स। बच्चे सिर्फ नए को नहीं जानेंगे, पुराने को भी पहचानेंगे। नई जानकारी उनकी जरूरत है तो पुरानी जानकारी उनकी धरोहर।

**कहानियां करती हैं कमाल**

हमेशा सच बोलो, बच्चों को यही सिखाया जाता है। पर, क्या वो ऐसा हमेशा करते हैं? वो ऐसा करने के बारे में जरा और सोचेंगे अगर उन्हें कहानियों के माध्यम से सच बोलने के फायदे और जिंदगी को सही तरीके से जीने के ऐसे ही तौर-तरीके सिखाएं जाएं। ग्रैंड पेरेंट्स ऐसा ही तो करते हैं। बच्चे अपने ग्रैंड पेरेंट्स का सम्मान करें, इसके लिए पहले आपको भी अपने माता-पिता का सम्मान करना और बच्चों की जिंदगी में उनके महत्व को समझना होगा।

**आप हैं रोल मॉडल**

हर बच्चे के लिए उसके माता-पिता रोल मॉडल होते हैं। आप अपने माता-पिता का साथ देंगे तो बच्चा इस बात से सीखेगा जरूर। वह जानेगा कि माता-पिता जिंदगी में बहुत अहमियत रखते हैं। बच्चे के मन पर इन बातों का गहरा असर होगा और वो इससे सीख लेगा।

**थोड़ी सतर्कता भी है जरूरी**

ग्रैंड पेरेंट्स के साथ अमूमन बच्चे सुरक्षित और खुश ही रहते हैं। पर, बच्चे की जिंदगी में दादा-दादी या नाना-नानी की अहम भूमिका है तो इसका मतलब यह नहीं है कि आप अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट जाएं। बच्चे पर कम ध्यान देने लगें या उनके साथ बेहद कम वक्त बिताने लगें। अगर आपको ऐसा लग रहा है कि बच्चे के साथ आपका रिश्ता पहले से कमजोर हो रहा है तो इसके लिए ग्रैंड पेरेंट्स को दोष देने की जगह आपको अपने व्यवहार के बारे में सोचने की जरूरत है। अपने मन की सुनें और फिर उसके अनुसार बच्चे के साथ अपने रिश्ते को मजबूत बनाने की दिशा में काम शुरू करें। आपको चिंता उस वक्त करने की जरूरत है, जब आप अपने बच्चे के व्यवहार में कुछ बदलाव देखें। जैसे लगातार रोना, आपकी बातों को एक सिरे से नकारना, पढ़ाई में ढेर सारी गलतियां करना और सामाजिक रूप से गलत व्यवहार करना, गाली-गलौज करना, गुस्सा करना और सामान तोड़ना आदि। बच्चे के व्यवहार में आए इन बदलावों को लेकर समय रहते सतर्क हो जाएं। इन संकेतों को पहचानें और उनके साथ ज्यादा-से-ज्यादा वक्त बिताना शुरू कर दें।◆◆◆

... बलबीर शर्मा,

# प्यारेलाल बेरी की पीड़ाएं



हिमाचल प्रदेश के क्रांतिकारी मजदूर नेता प्यारेलाल बेरी को आपातकाल में 3 दिन 3 रात तक बहुत ही टॉर्चर किया गया। कहते हैं अभी भी जनवरी की सर्द रातों में बालूगंज थाना क्षेत्र में किसी की चीखने की आवाजें गूंजती हैं। उनसे एक ही प्रश्न बार-बार पूछा गया कि वे बताएं कि 'चुनौती' समाचार पत्र कौन निकालता है? कहां छपती है यह पत्रिका?

प्यारेलाल बेरी एक प्रतिष्ठित मजदूर नेता थे, विद्वान थे और श्रम कानूनों पर उनकी पूरी पकड़ थी। उनका पूरा जीवन मजदूर हित एवं समाज हित के लिए समर्पित था। ऐसे व्यक्ति के साथ इस प्रकार बेरहमी से रात दिन पाश्विक व्यवहार करना, इसका उदाहरण कहीं नहीं मिलता है। हमारे एक और संघ के कार्यकर्ता थे कुल्लू से प्रेम कुमार झानचंदानी। उनको अपनी गिरफ्तारी स्कैंडल प्वाइंट शिमला में देनी थी। शिमला पुलिस ने गिरफ्तार किया और उन पर किए अत्याचारों की कहानी भी कोई कम नहीं है। हमारे तीसरे क्रांतिकारी योद्धा थे कांगड़ा के संघ के सुभाष गुप्ता। योजना से उनको गिरफ्तार नहीं होना था और क्षेत्र में साहित्य का वितरण करना था जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। वे मेरे पास अक्सर आते रहते थे। एक बार हमारी योजना बनी कि एक खुली जीप में लगभग 2/3000 पत्रक रखकर पालमपुर के पुराने बस स्टैंड से तेजी के साथ मेन बाजार से होते हुए पठानकोट की ओर दौड़ाई जाए। ऐसा किया गया। पूरा पालमपुर मेन बाजार पत्रकों से भर गया और जीप गायब हो गई। जिला कांगड़ा के एसपी मिस्टर पी एस कुमार और डीसी, हमारे सुभाष गुप्ता से पहले ही बहुत परेशान थे। इस घटना के बाद वे पागल से हो गए। उन्होंने सुभाष गुप्ता को देखते ही गोली मारने का आदेश जारी कर दिया (पर हिमाचल सरकार तो उन्हें लोकतांत्रिक सेनानी नहीं मानती)। इसका हम पर या हमारे काम पर तो कोई प्रभाव था नहीं।

शिमला की पुलिस अपने आप को गुलामी के समय की पुलिस से भी ज्यादा अत्याचारी साबित करना चाहती थी। पूरी अफसरशाही और न्यायपालिका सरकार के सामने लेट गई थी। हमें गर्व है कि शिमला से बाहर विशेषकर मंडी और हमीरपुर में जजों ने न्यायपालिका की न्याय पताका को फहराए रखा। अगले दिन जब शिमला से डीएसपी श्री रंजीत सिंह मंडी पधारे और मेरे से थाना चौकी में रात 11.00 बजे पूछताछ शुरू हुई तो सबसे पहले मुझे यही सूचना दी गई, आपको प्यारे लाल बेरी की हालत से अनुमान हो गया होगा कि पुलिस क्या कर सकती है? यहां तो आप की लाश संभालने वाला भी कोई नहीं है और फिर प्यारेलाल बेरी ने 'चुनौती' के संपादन एवं प्रकाशन के बारे में आपका नाम लिया है'।

मैंने डीएसपी की बात सुनी फिर आराम से कहा, 'मिस्टर रंजीत जब आपने मेरी प्यारे लाल जैसी हालत करनी होगी तो आप पूछेंगे नहीं और ना ही मुझे पहले बताएंगे और हां। एक बात मेरी समझ में नहीं आई, यदि प्यारे लाल बेरी ने चुनौती के प्रकाशन में मेरा नाम लिया ही है तो आपको कौन रोक रहा है मुझे गिरफ्तार करने के लिए? मैं तैयार हूं, लेकिन एक बात मैं बार-बार कह रहा हूं, कि मेरा चुनौती से कोई लेना देना नहीं है। आपकी यहां मण्डी की सीआईडी 24 घंटे मेरी निगरानी करती है यदि उनकी रिपोर्ट आपको यह कहती है कि मैं 'चुनौती' का काम करता हूं या उसमें सहयोगी हूं तो आप मुझे गिरफ्तार कर लीजिए। रंजीत सिंह के पास ऐसा कोई प्रमाण नहीं था कि मेरी बातों की काट कर सकें। मैं जानता था कि मंडी सीआईडी ने इनको मेरे बारे में ऐसी कोई रपट नहीं भेजी है। इसलिए इनके पास मुझे गिरफ्तार करने का कोई कारण नहीं है। सुबह के लगभग 11.00 बज गए थे। मुझे जाने के लिए कहा गया। थाने से बाहर निकला, बहुत प्यास लगी थी। पूरी रात भले मानसों ने पानी तक नहीं लेने दिया। सामने हलवाई की दुकान थी, उसके पास गया और कहा भाई साहब पहले पानी पिला दें और फिर एक कप गर्म गर्म चाय मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी। वह आराम से बैठा रहा। मैंने दोहराया,'भाई साहब पानी और चाय मिलेगी' तो उसने कह दिया कि शर्मा जी मैं तो दुकान की सफाई वगैरह करने आया हूं। वैसे भी पानी और दूध तो आज आया ही नहीं। चाय नहीं बन पाएगी और वह खड़ा हो गया। मतलब साफ था कि मैं भी जाऊं।

*वाह! रे मेरे देश के लोगों। जिनके लिए*
*हम स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे,*
*उनके अधिकारों की रक्षा के लिए टार्चर*
*झेल रहे थे, वे हमें पानी पिलाने को भी*
*तैयार नहीं थे।*

मुझे उन सब क्रांतिकारियों की याद आई। किस प्रकार कैसा रहा होगा उनका जीवन? कितनी मानसिक यातनाएं झेली होंगी उन्होंने? सरकार से भी और अपने ही देश के लोगों के व्यवहार से भी?

*सचमुच रुला देते हैं यह लोग। और*
*कभी कभी तो भिखारी सा बना देते हैं*
*यह मेरे लोग।। रोना नहीं ए दिल, तुझे*
*संभलना होगा। गर्दशे वक्त है यह, इसे*
*गुजरना होगा।*◆◆◆

# एक कदम निरोगी भारत की ओर

## कोरोना जैसी महामारी से बचाव के लिए ग्रीष्म ऋतुचर्या

हमारा भारत एक ऋतु प्रधान देश है। प्रकृति में ऋतु व जलवायु के अनुसार ही अनाज, फल-फूल, सब्जियां पैदा होती है। इसलिए ऋतु अनुसार भोजन करने से ही मानव सदैव स्वस्थ रह सकता है व किसी भी कोरोना जैसी महामारी से बच सकता हैं। इस बार हम ग्रीष्म ऋतु का वर्णन करेंगे।

### ग्रीष्म ऋतु

**ग्रीष्म ऋतु '19 मई से 16 जुलाई तक' :** ग्रीष्म ऋतु में शरीर का कफ सूखता है। यह अल्पअग्नि (मंद जठरअग्नि) ऋतु है।

इस ऋतु के लिए आयुर्वेद के अनुसार 'ऋतु चर्या, ग्रीष्म ऋतु के लिए उत्तम आहार (पथ्य), हल्का, सुपाच्य भोजन लेना है। जौ का आटा , शालि धान्य (लाल चावल), मूंग की छिलके वाली दाल, अरहर दाल, मसूर दाल व शुद्ध घी खाना उत्तम है।

दही खाना 'अच्छा' है लेकिन लगातार नहीं खाना है। दही में पानी मिला कर, थोड़ा मथ कर, देसी खांड मिलाकर पीना है अर्थात, खांड युक्त दही लेना है। मट्ठा/छाछ लेना उत्तम है, यह अग्नि दीपन करता है।

**सब्जियां :** करेला, पेठा, घिया, परवल, मटर, व मौसम की रसदार सब्जियां (देसी खीरा, ककडी)।

**फल :** तरबूज, खरबूजा।

इस ऋतु में निद्रा लाभप्रद है। गुड़ के साथ हरीत की (हरड़) का सेवन उत्तम है।

दूध, दही, छाछ, घी (मथनी घृत) =विशेष=शुद्ध भारतीय नस्ल की देसी गोचर की गाय का दूध / दही/ छाछ व वैदिक मथनी घृत (घी) ही उत्तम आहार है।

दही का सेवन ऋतु अनुसार ही करें।

### (अपथ्य )

ग्रीष्म ऋतु में हानिकारक आहार= तेल, उड़द, छोले राजमा, अधिक नमक (लवण), खटटा (अम्ल) व धूप से बचना है। किसी भी ऋतु में उड़द व दही एक साथ नहीं लेना है, यह बुद्धि को कम करता है। दही भल्ल में उड़द के स्थान पर मूंग की दाल उपयोग में लाए।

### विशेष

चाय पित दोष को बढ़ाती है। जठर अग्नि को दूषित करती हैं। चाय उपवास में निषेध हैं। दूषित घी-पुरानी मलाई इकट्ठी करके बनाया हुआ घी दूषित हैं। शरीर के रस को दूषित करता है व बीमारियों को पैदा करता है।

**शुद्ध वैदिक मथनी घृत :** गोचर को जाने वाली शुद्ध भारतीय नस्ल की देसी गाय के दूध को 8 घण्टे मिट्टी की हंडिया में पकाकर दही जमाकर, दाएं बाएं चलाने वाली मथनी से मथकर निकले मक्खन से बना विशुद्ध घृत, सभी बीमारियों की औषधि है।

**निरोगी :** जीवन के लिए पांच सफेद ज़हर से बचें और उसका विकल्प

1. **उजला दूध :** भैंस, जर्सी, हालिसटाइन, फिजियन, क्रॉस का दूध के बदले भारतीय नस्ल की गाय का दूध (क्षीर) का प्रयोग करें।
2. **उजला नमक :** आयोडीन युक्त नमक के बदले शुद्ध नमक खायें - सेंधा नमक, काला नमक या झील का नमक।
3. **उजला चावल :** सफेद पालिश किया हुआ चावल न खाएं- इसके बदले लाल या भूरा चावल खाएं।
4. **उजला चीनी :** सफेद केमिकल युक्त चीनी नहीं खाएं - इसके बदले गुड़, बूरा, देसी शक्कर, खांड या मिश्री खायें।
5. **उजला आटा :** सफेद आटा अर्थात गेहूं नहीं खाएं- इसके बदले बाजरी, जवारी, मक्का, मंडल/मंडूआ (रागी) खाएं।

**-पंचगव्य डॉक्टर्स एसोसिएशन**
**हिमाचल प्रदेश (भारत)**

# बीएलएम आंदोलन और भारत'

... प्रशांत पोल

वामपंथियों द्वारा इस आंदोलन को वैश्विक बनाने के प्रयास किए गए।

इंग्लंड, फ्रांस, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, इटली, नीदरलैंड आदि देशों में रंगभेद-नस्लभेद के विरोध में बीएलएम के बैनर पर बड़े बड़े प्रदर्शन अभी भी हो रहे हैं। अनेक स्थानों पर, नस्लवाद के प्रतीक के रूप चिह्नित प्रतिमाओं को विद्रूप किया गया। लंदन में जब बीएलएम ने विरोध प्रदर्शन की घोषणा की, तो लंदन के महापौर सादिक खान ने, पार्लियामेंट सर्कल के पास बने सर विंस्टन चर्चिल और महात्मा गांधी की प्रतिमाओं को कार्ड बोर्ड से ढांक दिया। इसका जबरदस्त विरोध हुआ। इंग्लैंड के गांधी प्रतिष्ठान के अध्यक्ष लॉर्ड मेघनाथ देसाई और विंस्टन चर्चिल के पोते ने इस प्रतिमा ढांकने वाली डरपोक कृति की तीव्र भर्त्सना की। 'पूरी दुनिया के साथ भारत में भी इस बीएलएम आंदोलन के माध्यम से भारत के मुसलमानों और दलितों को उकसाने का पूरा प्रयास हुआ।' वामपंथियों की टोली ने इसे, उनके 'इको सिस्टम' के अंतर्गत, एक बड़ा उबलता विषय बनाने का प्रयत्न किया।

इसकी शुरुआत हुई, जॉर्ज फ्लॉयड की मृत्यु के एक सप्ताह के अंदर। 1 जून को The Wire में एक बड़ा आलेख छपा ''Why Indians don't come out on the streetsAgainst regular police brutality ?''

3 जून को Scroll. में रुचिका जोशी का एक बड़ा सा लेख छपा- In US Protests lessons for Indians, who believe in the possibilities of collective resistance.' इस आलेख में रुचिका जी ने CAA के विरोध में रास्ते पर उतरे प्रदर्शनकारियों की याद दिलाई हैं। वे आगे लिखती हैं- There is a notable resemblance in the repression facing Muslims inA Hindu majority India] with that experience by Black people in predominantly white USA' जैसे गोरों के बाहुल्य वाले अमेरिका में अश्वेत लोगों की अवस्था हैं, उसी प्रकार हिन्दू बहुल भारत में मुसलमानों की हैं।'

फिर 5 जून को फॉरेन पॉलिसी डॉट कॉम में प्रकाश कुमार का लेख छपता हैं-

"Indian ıre supporting George FloydAnd ignoring Police brutality in their own country।''

इसमे ये क्या लिखते हैं, यह देखना आवश्यक हैं - 'protests Also raiseAn uncomfortable question in world*s largest democracy : WhyAre there no mass demonstrations over the frequent cases of police brutality in India.'

& Common Cause नाम के NGO के सर्वे का उल्लेख करते हुए वे लिखते हैं -'50% Police in India feel that MuslimsAre prone to community crime'

अब 8 जून को अरुंधति रॉय भी इस नरेटिव तयार करने के अभियान में कूद पड़ती हैं।'दलित कैमरा' नाम के, विदेशों के वामपंथी सर्कल में लोकप्रिय पोर्टल को दिये हुए साक्षात्कार में वे कहती हैं-'Indian racism towards black people is almost worst than white people's racism' इस पूरे साक्षात्कार में ये मोहतरमा, 'दलित और मुस्लिमों के प्रति, हिन्दू कैसा घृणा का भाव रखते हैं', यह बताती हैं। भारत में #DalitLivesMatter की आवश्यकता के बारे में भी बात करती हैं।मूर्तियों को विद्रुप करने के बारे में वे कहती हैं, 'गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका में ब्लैक अफ्रीकन के विरोध में नस्लवादी टिप्पणी की थी, इसलिए उनकी प्रतिमा (मूर्ति) को विद्रुप किया गया।' 'इन सब को क्रोनोलोजिकल ऑर्डर से कालानुक्रम के अनुसार' पढ़ने पर क्या चित्र सामने आता हैं? TheWire, Scroll, The Print जैसे तमाम वामपंथी प्रसार माध्यम इस देश में अराजकता फैलाना चाहते हैं। भारतीय पुलिस के तथाकथित बर्बरता का विकृत चित्र सारे विश्व के सामने रखते हैं। कोरोना के तीन महीने की कालावधि में, भारतीय पुलिस का जो मानवीय, दयालु, और सकारात्मक चेहरा सामने आया है, उसे ये लोग तार-तार करना चाहते हैं। बार-बार, अमेरिका के अश्वेतों से, भारतीय मुसलमानों की तुलना करके, हिंदुओं को उनसे 'ब्लैक लाइव मैटर' की तर्ज पर घुटने टेक कर क्षमा मांगने का आग्रह कर रहे हैं।◆◆◆

# कुरान और हैरिस के कई प्रश्न

... डॉ. शंकर शरण

हैरिस की रुचि वैज्ञानिक विश्लेषण में है। इसीलिए 'द कर्स ऑफ गॉड: वाय आई लेफ्ट इस्लाम' में इस पर केंद्रित अध्याय काफी मौलिक है। मुसलमानों को बताया गया है कि कुरान दुनिया की सर्वश्रेष्ठ किताब है, जिस में अल्लाह के शब्द हैं। इसलिए उस में न कोई गलती है, न उस में कुछ बदला या छोड़ा जा सकता है। इस दावे के मद्देनजर यदि कुरान में एक भी आयत में गलती या छोड़ने लायक चीज मिले दृ तो पूरा दावा गलत साबित होगा। इस परीक्षण में हैरिस कई प्रश्न उठाते हैं।

एक, दुनिया में अनेक अनूठी पुस्तकें कुरान से पहले और बाद भी लिखी गई। उन पुस्तकों में गुलामी, भिन्न विचार वालों को मारना, स्त्रियों पर जबरदस्ती, मनमानी हिंसा, अपशब्द, डरना-डराना, आदि कुछ नहीं है। इस के बदले ऐसी सुंदर दार्शनिक बातें हैं जो हजारों वर्ष बाद भी आज ऊंची समझ और आनन्द देती है। वह तनिक भी पुरानी नहीं लगती और उस में कुछ भी छोड़ने लायक नहीं मिलता। वे बातें बिल्कुल साफ हैं जिन्हें समझने में किसी पुनर्व्याख्या की जरूरत नहीं पड़ती। तो कौन सी पुस्तक श्रेष्ठ है?

दूसरे, यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान है तो उस ने अपना संदेश देने के लिए एक छोटा, नामालूम सा अरब क्षेत्र और मनुष्य के माध्यम से मौखिक बोल-बोल कर व्यक्तियों को संदेश दिलवाने की पद्धति क्यों चुनी? आज कोई वीडियो बनाता है, जो एक दिन में दुनिया भर में लाखों लोगों तक पहुंच सकता है। सो पहले तो अल्लाह ने अमेरिका, चीन, भारत, जैसे विशाल समाजों को छोड़ कर एक अत्यंत छोटे से अरब समूह को क्यों चुना। फिर, क्या उस के पास कोई तकनीक नहीं थी जो आज मामूली इंसानों के पास है, कि एक ही बार में संदेश सारी दुनिया में और सीधे पहुंच जाए? यदि अल्लाह भी मनुष्य की तकनीकी सीमा से बाधित और निर्भर है, तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है।

तीसरे, जिहाद वाली आयतों पर दोहरे-तिहरे अर्थ क्यों निकाले जाते हैं? जैसे, ''अल्लाह की राह में युद्ध करो, और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।'' (कुरान, 2-244)। इस्लामी स्टेट वाले मौलाना इस का अर्थ काफिरों पर चढ़ाई करना, और कोई अन्य मौलाना अपनी रक्षा करना बताते हैं। अपनी-अपनी पसंद या समय-स्थान देख कर इस का अर्थ बदला जाता है। क्या अल्लाह टॉल्सटॉय या आइंस्टीन की तरह ऐसे वाक्य नहीं बोल सकता जिस के अर्थ पर कोई शक-शुबहा न हो?

चौथे, पृथ्वी और ग्रहों के निर्माण, सूरज के डूबने की जगह, धरती का आकार, मनुष्य के जन्म की प्रक्रिया, आदि संबंधी तथ्यगत गड़बड़ियां भी मिलती हैं। इस पर मौलाना और विश्वासी मुसलमान आज की दृष्टि से उस की सफाई देते हैं। यह तो अल्लाह के बदले, मनुष्य का विचार उस में डालने जैसा है।

पांचवें, जिन आयतों को बाद में 'शैतानी' कह कर मुहम्मद ने खारिज किया था (कुरान, 53-20,21 के बीच में वे आयतें थीं), वह मुहम्मद से गलती होने का खुला सबूत है। एक गलती प्रमाण है कि उसके अलावा भी गलतियां रही हो सकती हैं। फिर, बाद में मंसूख, निरस्त की गईं आयतें, एक ही विषय पर 'उस से अच्छी' आयतें', और अल्लाह की टिप्पणी (कुरान, 2-106), आदि खुद मानती हैं कि पहले वाली आयतें उतनी अच्छी नहीं थीं। तभी तो बाद वाली आयतों के 'और अच्छे' होने की दलील दी गई। जानकारों के अनुसार, कुरान में कुल 564 आयतें मंसूख की गई बताई जाती हैं (पृ. 170)। अत: अल्लाह का संदेश भेजना अथवा मुहम्मद का सुनना, कहना त्रुटिहीन नहीं था। तब कुरान और मुहम्मद को त्रुटिहीन कैसे कहा जा सकता है?

इन सब के मददेनजर भी अल्लाह के होने, और उस की सर्वशक्तिमानता पर संदेह होता है। हैरिस के हिसाब से अल्लाह सीधो मनुष्यों से संवाद नहीं कर सकता, सो अपना प्रोफेट भेजता है। वह प्रोफेट सदैव जिन्दा नहीं रहेगा, सो वह एक किताब छोड़ जाता है। वह किताब बार-बार विकृत या उस की नई-नई व्याख्या होती है। अत: अल्लाह के संदेश के कई अर्थ बन जाते हैं। विविधा ईमाम, मौलाना अपनी-अपनी व्याख्या को 'अल्लाह का असली संदेश' कहते हैं। यह देखते हुए तो आज मनुष्यों ने बेहतर काम कर दिखाया जिन के बनाए सॉफ्टवेयर हू-ब-हू संदेश रिकॉर्ड करते हैं जो शायद ही विकृत होते हैं।

फिर, प्रोफेट मुहम्मद के क्रिया-कलापों के भंडार में अनेक बातों की लीपा-पोती की जाती है। इतिहास में किसी मनुष्य के बारे में इतनी जानकारियां उपलब्ध नहीं हैं, जितनी मुहम्मद के बारे में। वे कैसे सोते थे, किस पैर में जूता पहले डालते थे, कैसे इत्र लगाते थे, किस चीज पर क्या राय रखते थे, आदि आदि। मुहम्मद के कार्यों में बहुतेरी ऐसी हैं जिन्हें उस समय भी सब ने उचित नहीं माना था। आज भी उन बातों को नजर अंदाज करने या औचित्य दिखाने के लिए तरह-तरह की बौद्धिक कलाबाजी होती हैं। जैसे, किसी के साथ समझौता मनमर्जी तोड़ देना, अपनी राह जा रहे काफिले को लूट लेना, नि:शस्त्र असहाय लोगों का सामूहिक कत्ल करना, किसी को

किसी को खत्म करवाना, हराए गए लोगों की बीवियों के साथ उन के सामने ही बलात्कार को नजर अंदाज करना, ऐसे बलात्कारों से उत्पन्न अवैध सन्तानों के भवितव्य पर कुछ न कहना, काबा के शान्ति-क्षेत्र होने के पुराने पारंपरिक नियम का उल्लंघन करना, स्त्रियों पर पुरुषों के मनमाने वर्चस्व का कायदा बनाना आदि। ये सब प्रोफेट मुहम्मद की जीवनी और सब से प्रामाणिक हदीसों में दर्ज हैं। कई बातें अनेक बार दुहराई मिलती हैं। इन में कितनी बातों से मानवता के लिए सदा-सर्वदा अनुकरणीय सर्वश्रेष्ठ पुरुष की छवि पुष्ट होती है? पुस्तक का एक अत्यंत प्रासंगिक अध्याय 'इस्लामोफोबिया' पर है (पृ. 184-94)। यह शब्द आज पूरे लोकतांत्रिक विश्व में मंत्र-सा रटा जाता है, लेकिन पूर्णत: गलत है। 'फोबिया' ऐसे भय को कहते हैं जो किसी भ्रम से होता हो। जैसे, किसी को पानी से या अंधेरे से डर लगे। लेकिन इस्लाम से भय तो वास्तविक है। दुनिया के कोने-कोने में जिहादी कुरान का नाम ले-लेकर धोखे से हमला कर सैकड़ों, हजारों की जान लेते रहते हैं। किसी जांच में अपवाद नहीं मिला कि इस्लामी विश्वास और कुरान केवल बहाना था, असली मकसद कुछ और था। बड़े-बड़े जिहादी नेताओं ने खुद चिठ्ठी या दस्तावेज प्रकाशित करके केवल इस्लामी विश्वासों की बात की है। फिर, असंख्य इस्लामी संस्थाएं, संगठन दुनिया से काफिरों को मिटा कर खालिस इस्लामी राज बनाने की घोषणा करते हैं।

यही शिक्षा अपने हजारों मदरसों में देते हैं। तालिबान और इस्लामी स्टेट ने आज भी पुरानी सांस्कृतिक धरोहरों को वैसे ही नष्ट किया, जैसे सदियों पहले गजनवियों, खिलजियों, मुगलों ने किया था। स्त्रियां उसी तरह वस्तु की तरह उठाई, रौंदी जातीं हैं, जो इस्लामी इतिहास में शुरू से मिलता है। तब इस्लाम से भय को 'फोबिया' कैसे कहा जा सकता है? यह तो मानवता के लिए सचमुच डर का विषय है। कई मुस्लिम देशों में भी मुस्लिम ब्रदरहुड, अल कायदा, तबलीगी जमात, जैसे इस्लामी संगठन प्रतिबंधित हैं। किसी भी स्त्री को इस्लाम से डर लगेगा। मारने-पीटने के निर्देश और स्त्रियों के प्रति व्यवहार के विवरण मूल इस्लामी किताबों में हैं। उसे इस्लामी शासक या मौलाना आज भी लागू करते हैं। अत: किसी स्त्री को इस्लाम से डर न लगना ही अस्वाभाविक बात होगी। बशर्ते, वह इस्लामी सिद्धांत और इतिहास जानती हो। इसी प्रकार, इस्लाम छोड़ने वाले मुलहिदों, और मुनाफिकों को भी डर लगेगा। क्योंकि इस्लाम उन्हें मार डालने का हुक्म देता है। काफिरों को तो डरना ही है क्योंकि इस्लाम का उद्देश्य ही उन्हें खत्म करना है। इसलिए, 'इस्लामोफोबिया' एक गलत दलील है, जिस की आड़ में इस्लाम पर विचार-विमर्श को बाधित किया जाता है।◆◆◆

# लाहौल भेजने के लिए करें व्यवस्था : संघ

**कुल्लू में फंसे जनजातीय क्षेत्र के 700 किसान कर रहे वापसी का इंतजार, राहत देने की मांग**

संवाद न्यूज एजेंसी

**कोकसर (लाहौल-स्पीति)।** कोरोना वायरस की वैश्विक महामारी के कारण लगे कर्फ्यू में लोग अब एक जिले से दूसरे जिले में नहीं जा पा रहे हैं। लाहौल-स्पीति के किसानों को अब अपनी खेती की चिंता सताने लगी है। घाटी के करीब 700 से अधिक किसान सर्दियों के दिनों में जनजातीय जिले से कुल्लू में अस्थायी तौर पर रहने पहुंचे थे। लेकिन कर्फ्यू के कारण अब वे वापस नहीं जा पा रहे।

अप्रैल माह में घाटी में खेतीबाड़ी का कार्य आरंभ हो जाता है। खासकर पट्टन घाटी में तो पनीरी लगाने व बिजाई करने का काम शुरू हो चुका है। ऐसे में भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश की शाखा ने मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर को पत्र लिखकर प्रदेश में कर्फ्यू के समाप्त होते ही इन किसानों को अटल टनल से घर भेजने की व्यवस्था करने का आग्रह किया है। संघ के प्रदेशाध्यक्ष सोमदेव शर्मा व प्रदेश महामंत्री सुरेश ठाकुर ने कहा कि प्रदेश के दुर्गम क्षेत्र लाहौल में साल में एक बार ही फसल की बिजाई की जाती है। अधिकतर परिवारों का भरण-पोषण खेतीबाड़ी से ही होता है। कहा कि पट्टन घाटी में आलू, मटर व अन्य सब्जियों की बिजाई का समय निकलता जा रहा है। लाहौल के अधिकतर किसान सर्दियों में अत्यधिक सर्दी के चलते कुल्लू पलायन कर जाते हैं। अगर यह किसान समय पर खेतीबाड़ी करने न पहुंचे तो किसानों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा।

कुल्लू में अन्नपूर्णा संस्था के सदस्य रोज शीशामाटी में रहने वाले मजदूरों को घर पर ही खाना पहुचा रहे हैं। - संवाद

इस घटना के बाद गांव में मा
गया है।

पुलिस से मिली जानक
अनुसार घटना शनिवार शाम
थाच गांव के पास तीन युव
के पेड़ से चारा निकालने
इस पर चढ़े। इस दौरान एक
चमन लाल (25), पुत्र त
निवासी गांव झनियार सबसे
चारा काट रहा था। इस दौर
टहनी अचानक टूट गई,
साथ वह नीचे गिरा। लेकि
दौरान पेड़ के निचले हिस्से
काट रहे ध्यान सिंह (25
सेस राम निवासी गांव थ

## जिले में मूलभूत सु

**कोकसर (लाहौल-स्पीति)।**
की जनता से कोरोना वायरस
अपील की है। उन्होंने कहा कि
सामना करना पड़ रहा है। सरक
सुविधाएं मुहैया करवाए। पिछले
बंद पड़ी हैं। लोगों की मूलभूत
ठाकुर ने कहा कि बीआरओ ने
लेकिन जनजातीय जिला लाहौ
बंद पड़े हैं। प्रशासन संपर्क मा
लोगों को परेशानी उठानी पड़
सामान भी समय पर नहीं मिल
जल्द जिले की सुध लें और

# पराक्रम का हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव

... नरेन्द्र सहगल

विजयी हिन्दू सम्राट छत्रपति शिवाजी महाराज ने ज्येष्ठ शुक्ल, त्रयोदशी सन 1674 के दिन हिन्दुपद पादशाही की स्थापना करके सारे संसार में रणभेरी बजा दी-भारत हिन्दु राष्ट्र था, है और रहेगा। भीषणतम एवं विपरीत परिस्थितियों में हिन्दू समाज जीवित रहेगा। भारत का राष्ट्र जीवन विजय का उपासक है, पराजय का नही।

वह समय ऐसा था जब चारों ओर घोर निराशा का अंधकार व्याप्त था। हिन्दुत्व विरोधी मुगलिया आतंकवाद अपनी चरम सीमा पर था। मंदिर तोड़े जा रहे थे, विद्या के केंद्र जलाए जा रहे थे, तलवार के जोर पर धर्मान्तरण किया जा रहा था, हिन्दुओं पर जजिया टैक्स लगाकर अमानवीय उत्पीड़न किया जा रहा था। पूर्णतया मरणासन्न की स्थिति में पहुंच चुका था हिन्दू समाज। ऐसी घोर विकट एवं निराशाजनक परिस्थितियों में शिवा जी द्वारा हिन्दुपद पादशाही की घोषणा करके भगवा ध्वज को लहराने का कार्य भारत के गौरवशाली इतिहास का एक और स्वर्णिम अध्याय बन गया।

अतीत में राष्ट्रनायक श्रीराम द्वारा राक्षसों का संहार करके रामराज्य की स्थापना और योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा अधर्मियों का विनाश करके धर्म की स्थापना जैसा ही यह एतिहासिक प्रसंग था शिवाजी का हिन्दू सम्राट के नाते राज्यभिषेक।

हिन्दू सम्राट छत्रपति शिवाजी ने भारत की सुप्त हो रही वीरव्रती रण परम्परा और क्षीण होते जा रहे राष्ट्रीय स्वाभिमान को पुनः जाग्रत करने में अद्भुत सफलता प्राप्त की थी। अतीत काल में भी सम्राट चन्द्रगुप्त, अशोक, पुष्पमित्र, समुद्रगुप्त, हर्ष, ललितादित्य, अवंतिवर्मन, कृष्णदेव राय और रणजीत सिंह और गुलाब सिंह जैसे शूरवीर हिन्दू सम्राटों ने विशाल साम्राज्यों की स्थापना की थी। भारतीयों के इसी गौरवशाली इतिहास को कुटिल अंग्रेजों ने मिटाने का भरसक प्रयास किया है। इस वीरव्रती इतिहास का पुनर्लेखन प्रारंभ हो चुका है। इतिहास साक्षी है कि माता जीजाबाई का परिश्रम सफल हुआ और शिवाजी ने बालपन से ही अपनी तलवार के जौहर और अद्भुत रणकौशल का परिचय देना प्रारंभ कर दिया। मात्र 17 वर्ष की आयु में शिवाजी ने अपनी बाल सेना के साथ तोरण नामक किले पर शत्रु को पराजित करके भगवा ध्वज फहरा दिया। इसके बाद उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक सैकड़ों युद्ध किए और जीते। एक बार शिवाजी के पिता शाह जी भौंसले बाल शिवा को मुगलिया दरबार में ले गए। पिता की इच्छा के विरूद्ध बाल शिवा ने दरबार की परम्परा के अनुसार अपना सिर नहीं झुकाया। शिवाजी के इस राज्य में संस्कृत एवं मराठी भाषाओं को पुनर्जीवित किया गया। फारसी भाषा को तिलांजलि देकर मराठी को राजभाषा बना दिया गया। टूटे मंदिरों के निर्माण से लेकर बहन-बेटियों के सम्मान की व्यवस्थाएं भी की गईं। राज्य की सुरक्षा के लिए सैनिकों की संख्या दो हजार से बढ़ाकर दो लाख तक कर दी गई। कोंकण और गोवा जैसे समुद्री तटों की रक्षा के लिए सरदार आंगरे के नेतृत्व में एक विशाल समुद्री बेड़ा नौ सेना का निर्माण भी किया गया। इस सारे कालखण्ड में शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध की तकनीक का आविष्कार करके अपने राज्य को बनाने एवं सुरक्षित करने के सभी उपाय कर लिए। इसी लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान की विजय के प्रतीक इस हिन्दू साम्राज्य दिवस को समस्त भारतवासी विशेषतय: विशाल हिन्दू समाज एक राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाता है-वर्तमान में विधर्मी तहजीब को भारत में सुरक्षित रखने के लिए विधर्मी लोग भारत की सनातन संस्कृति पर तरह-तरह के आघात कर रहे हैं। अत: आवश्यकता इस बात की है कि समस्त हिन्दू समाज अपने राष्ट्रधर्म को बचाने के लिए एक जूट होकर शक्तिशाली बने। ◆◆◆

# गलवान के अमर शहीद अंकुश ठाकुर पंचत्व में विलीन

अमर शहीद जवान अंकुश ठाकुर को हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले के भोरंज क्षेत्र के गांव कड़ौहता में अंतिम विदाई दी गई। उनकी पार्थिव देह को छोटे भाई आदित्य ठाकुर ने मुखाग्नि दी। शहीद अंकुश पूर्वी लद्दाख के गलवान सैक्टर में 15 जून को चीन की सेना से हिंसक झड़प में शहीद हुए 20 भारतीय सैनिकों में से शहीद अंकुश भी एक थे, जिन्होंने देश की सम्प्रभुता और अखंड़ता के लिए सर्वोच्च बलिदान देते हुए वीरगति प्राप्त की। शहीद की इस अंतिम यात्रा में हिमाचल के इस वीरसैनिक की जन्म भूमि कडौहता के अलावा दूरदराज से आए हजारों लोग शामिल हुए। जम्मू-कश्मीर से शहीद अंकुश ठाकुर की पार्थिव देह को पठानकोट के मेहतपुर होते हुए उना पहुंचाया गया। यहां से पंजाब रैजिमेंट की गाड़ी से शहीद की पार्थिव देह को उनके पैत्रिक गांव कड़ौहता पहुंचाया गया। इस दौरान उनके परिवार और गांव के लोगों की स्थिति काफी भावुक थी। एक ओर जहां स्थानीय लोग अंकुश भाई अमर रहे और भारत माता की जय के नारे लगा रहे थे वहीं चीन की इस कायराना हरकत के खिलाफ लोगों में भारी रोष भी देखने को मिला।

शुक्रवार को जम्मू- कश्मीर से जब शहीद अंकुश ठाकुर की पार्थिव देह को हिमाचल प्रदेश के जिला हमीरपुर के भोरंज स्थित कडौहता गांव लाया गया। इस दौरान हमीरपुर के सलौणी से लेकर कडौहता तक करीब 25 किलोमीटर का बाजार शहीद के सम्मान में बंद रखा गया। इसके अलावा शव यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। पंजाब रेजिमेंट के सैनिकों ने भी इस अवसर पर वीर सैनिक को जमीनी गायर कर सम्मान दिया।

इस अवसर पर ग्रामीण विकास पंचायती राज, पशुपालन एवं मत्स्य पालन मंत्री वीरेन्द्र कंवर के अतिरिक्त सरकाघाट विधानसभा क्षेत्र के विधायक कर्नल इंद्र सिंह, हमीरपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक नरेन्द्र ठाकुर, भोरंज विधानसभा क्षेत्र की विधायक कमलेश कुमारी, जिला परिषद अध्यक्ष राकेश ठाकुर, सुजानपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक राजेन्द्र राणा, बड़सर विधानसभा क्षेत्र के विधायक इंद्र दत्त लखनपाल, सेना की ओर से शहीद के साथ आए ब्रिगेडियर हरीश कुमार सेठी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की ओर से एस.डी.एम. भोरंज अमित कुमार तथा विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े समाज सेवियों ने भी वीर सैनिक शहीद अंकुश ठाकुर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कर उनकी आत्मिक शांति के लिए परम परमेश्वर से कामना की तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त कीं। जिला प्रशासन की ओर से उपायुक्त हरिकेश मीणा, पुलिस अधीक्षक अर्जित सेन ठाकुर ने भी देश के वीर सपूत शहीद अंकुश ठाकुर को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।◆◆◆

# शिकायत दर्ज करे भारत

... मारिया विर्थ

हिन्दू हितचिंतक जर्मन लेखिका मारिया विर्थ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक पत्र लिखकर मांग की है कि संयुक्त राष्ट्र में हिंदुओं के लिए 'हीदन' 'काफिर' और 'बुतपरस्त' जैसे शब्दों के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए भारत सरकार एक याचिका दायर करें। यहां प्रस्तुत है उनका वही पत्र- आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, मैं भारतीय नागरिक नहीं हूं, लेकिन मैं भारत का सम्मान करती हूं और मेरी इच्छा है कि इसकी संस्कृति पल्लवित हो और समस्त विश्व को सुवासित करे, क्योंकि यह संपूर्ण मानव जाति के लिए हितकारी है।

भारत को छोड़कर, सभी प्राचीन संस्कृतियों को ईसाई या इस्लाम या कुछ मामलों में साम्यवाद ने नष्ट कर दिया है। भारत एकमात्र पुरातन संस्कृति है, जो अब भी प्राणवान है, लेकिन उसे भी लील जाने के लिए ये तीन नकारात्मक शक्तियां घात लगाए बैठी हैं। कृपया मुझे एक सुझाव देने की अनुमति दें, क्योंकि मैं अंदरूनी तौर पर ईसाई मत और हिंदू धर्म दोनों से भली-भांति परिचित हूं। 'हीदन', 'काफिर' और बुतपरस्त ऐसे शब्द हैं जो अपमानजनक और हेय माने जाते हैं, फिर भी ईसाई और मुस्लिम बच्चों को बेहिचक इन शब्दों को हिंदुओं के लिए इस्तेमाल करना पढ़ाया जाता रहा है। यह एक खतरनाक चलन है, क्योंकि ये शब्द हिंदुओं को अमानवीय बताते हैं जिससे घृणाजनित अपराध जन्म लेते हैं और कई बार नरसंहार का कारण भी बनते हैं। संयुक्त राष्ट्र के एक अधिकारी ने कहा कि यहूदियों का नरसंहार गैस चैम्बर से नहीं, बल्कि घृणा उगलते भाषणों से शुरू हुआ था। ऐसा ही हिंदुओं के खिलाफ भी हो रहा है। इन दोनों पंथों की मजहबी सभाओं में दिए जा रहे प्रवचनों में नियमित रूप से हिंदुओं के खिलाफ घृणा भरे भाव व्यक्त किए जाते हैं। क्या भारत सरकार संयुक्त राष्ट्र में ईसाई और मुस्लिम मतावलंबियों द्वारा हिंदुओं के प्रति भेदभाव दर्शाने वाले शब्द 'हीदन' और 'काफिर' को मानवीय गरिमा को ठेस पहुंचाने और समानता का उल्लघंन करने वाला घोषित करने की याचिका दे सकती है, जिन्हें ईश्वर स्वर्ग का अधिकारी नहीं मानता और नरक में फेंक देता है? बुरा मंतव्य रखने वाले नेता संकीर्ण और साम्प्रदायिक विचारधारा में हिंसा का उन्माद घोलकर अपने समर्थकों को बार-बार याद दिलाते हैं कि 'अल्लाह चाहता है कि पृथ्वी पर सिर्फ मुसलमानों का राज हो और इसलिए उन्हें जिहाद करना होगा, तभी जन्नत नसीब होगी' कुरान 495। चर्च अब उतना मारक नहीं रहा जैसा पहले था, लेकिन 'हीदन' अब भी उसकी नजर में हेय है जिसे कन्वर्ट करना उसका कर्तव्य है। इससे समाज को बहुत नुकसान पहुंच रहा है। दोनों पंथों के अनुयायी अपने बच्चों के अंदर बालपन की कोमल अवस्था में ही अपनी-अपनी मजहबी विचार धाराओं का कट्टर पाठ सिखा रहे हैं जिसकी गांठ बहुत मजबूत होती है, भारत में तो यह कुछ ज्यादा कठोर होती है, ताकि उनके अंदर भूल से भी वापस लौटने की इच्छा न जागे। मजहबी

## प्रतिक्रिया

स्वतंत्रता की अपनी सीमाएं होती हैं, उसका अतिक्रमण होने से दूसरों के बुनियादी अधिकारों का उल्लघंन होता है। भारत, इजराइल, जापान, चीन, नेपाल, थाईलैंड जैसे एशियाई देशों में इस मुद्दे को गंभीरता से देखने की जरूरत है, क्योंकि बाकी दुनिया के देशों में मुस्लिम या ईसाई बहुल आबादी बसी है। हालांकि कई पंथनिरपेक्ष यूरापीय सरकारें इस तरह की याचिका का समर्थन कर सकती हैं, क्योंकि उनके नागरिक अब चर्च के बताए सभी रास्तों का पालन करना जरूरी नहीं समझते। पाकिस्तान और इस्लामी सहयोग संगठन ने संयुक्त राष्ट्र में इस्लाम और इस्लामोफोबिया की आलोचना पर प्रतिबंध लगाने के लिए याचिका दायर की है, जो उनकी बुरी नियत दर्शाती है और इस बात का संकेत देती है कि उन्हें भी मालूम है कि वे अपने सिद्धान्त का विवेकापूर्ण बचाव नहीं कर सकते। भारत की चिंता उचित है और इस संबंध में कदम उठाना अत्यंत जरूरी है। हिंदुओं को हेय दृष्टि से देखा जाता है और उनके साथ हीन बर्ताव किया जाता है जो उनके लिए बहुत पीड़ादाई है। अब समय आ चुका है कि भारत सरकार संयुक्त राष्ट्र में इस तथ्य पर अपनी आपत्ति दर्ज करे, क्योंकि अधिकांश भारतीय नागरिकों को प्राणियों में सबसे बुरा घोषित किया जा रहा है 'जो अनंतकाल तक नरक की यातना भोगेगा' कुरान 98.6 चर्च का यह भी दावा है कि 'हिन्दू नरक से नहीं बच पाएंगे' अगर वे यीशु का नाम सुनने के बाद भी उनकी शरण में नहीं आते'। हिंदू नहीं मानते कि परमेश्वर उन्हें नहीं अपनाएंगे, लेकिन कई भारतीय मुस्लिम और ईसाई ऐसा ही मानते हैं। उन दावों को सार्वजनिक तौर पर व्यस्त करके उनमें से कई आश्चर्य भी करते होगें कि क्या यह वास्तव में सच हो सकता है? इन दोनों पंथों में संभवत: सुधार मुमकिन नहीं, लेकिन इसके हानिकारक संदेशों का पालन न करने की राह का विकल्प खुला है। ईसाई पंथ और कुछ हद तक इस्लाम से भी पलायन शुरू होने लगा है। भारत इस रूझान को तेज करने में अहम भूमिका निभा सकता है। उस विचारधारा को कटघरे में खड़ा करने का समय आ चुका है जिसकी जद में सैकड़ों सालों से लाखों लोगों ने जान गंवाई है। इसे बदलने का प्रयास सभ्यताओं की संघर्ष गाथा का संभवत: सबसे महत्वपूर्ण मोड़ होगा। संभवत: सबसे महत्वपूर्ण मोड़ होगा।◆◆◆

# बिहार में करवट लेने लगा कालीन उद्योग

... संजीव कुमार

कभी अपने कालीन और वस्त्रों के लिए चर्चित रहने वाले बिहार में फिर से कालीन उद्योग ने करवट बदली है। अब बिहार का कालीन उद्योग पुनर्जीवित हो रहा है। बक्सर के राजपुर प्रखंड स्थित मगरांव में कालीन उद्योग की पहचान अब दूर-दूर तक होने लगी है। उत्तर-प्रदेश के भदोही के प्रसिद्ध कालीन उद्योग में कार्यरत गांव के दर्जनों युवक अब वापस अपने गांव में ही कालीन उद्योग को आकार देने में जुट गये हैं। इन सब युवकों का केन्द्र बिन्दु मगरांव का ही प्रफुल्लचंद गुप्ता बना है। ठन1 मगरांव में कालीन उद्योग की शुरूआत चार वर्ष पूर्व हुई। प्रफुल्लचंद गुप्ता मैट्रिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद भेदोही के कालीन उद्योग में काम कर रहे थे। कुछ वर्षों तक काम करने के बाद उन्हें लगा कि क्यों न इस शिल्प को अपने गांव में शुरू किया जाए। वहां के स्थानीय कारीगरों और दुकानदारों से संबंधा स्थापित कर अपने गांव मगरांव में कालीन उद्योग प्रारंभ किया। प्रफुल्ल की प्रेरणा से अब तक 14 युवक अपने घर में कालीन का निर्माण कर रहे हैं। एक सामान्य कालीन के निर्माण में अमूमन 15 दिन का समय लगता है। डिजायनरों द्वारा बनाये गये नक्शे पर मजदूर इसे बनाते हैं। यह एक प्रकार के सूती रेशम से तैयार किया जाता है। कालीन की कीमत उसकी कलाकारी के आधार पर तय होती है। इस गृह उद्योग को शुरू करने में 1 से 1.50 लाख तक की राशि का खर्च आता है। सरकार द्वारा कोई सुविधा या बाजार उपलब्ध नहीं कराये जाने से परेशानी तो हो रही है लेकिन, अपने हिम्मत से इनलोगों ने रास्ता भी निकाल लिया है। प्रफुल्लचंद समेत सभी उद्यमी मानते हैं कि अगर काम बेहतर हो तो बाजार स्वयं मिल जायेगा। अब धीरे-धीरे इनके बनाये कालीन की मांग होने लगी है। हाथ से बने कालीन की काफी मांग होती है। बिहार कभी अपने वस्त्र उद्योग को लेकर चर्चा में रहता था। बंगाल के तर्ज पर जहानाबाद का भी मलमल काफी प्रसिद्ध था। मेनचेस्टर का सूत उद्योग कहीं कमजोर न पड़ जाये इसलिए ढाका के समान जहानाबाद के कारीगरों के भी अंगूठे काट लिये गये थे। अभी भी गया के मानपुर के बने सूती वस्त्रें की मांग खूब होती है। मानपुर वस्त्र उद्योग से जुड़े लोगों ने तो आईआईटी में प्रवेश करने का देश में मॉडल ही स्थापित कर दिया। औरंगाबाद के कालीन की धूम पूरे विश्व में थी। राष्ट्रपति भवन की शोभा बिहार के औरंगाबाद स्थित ओबरा का कालीन बढ़ाता था। कभी इंग्लैंड की महारानी भी अपने राजमहल के लिए ओबरा से कालीन मंगवाती थी लेकिन कालक्रम में यह परिस्थितियां बदल गईं। यहां का कालीन उद्योग समाप्त होने लगा। यहां के बुनकर अली मियां की कार्यकुशलता व दक्षता के लिए उन्हें 1972 में राष्ट्रपति सम्मान भी प्रदान किया गया था। 1974 में भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय ने यहां प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की। वर्ष 1986 में तत्कालीन जिला पदाधिकारी के मार्गदर्शन में असंगठित कालीन बुनकरों को एक साथ संगठित कर 5 मार्च, 1986 को महफिल-ए-कालीन बुनकर सहयोग समिति का निबंधान किया गया। इसी वर्ष डीआरडीए के आधारभूत संरचना कोष से प्राप्त 7 लाख रूपये से संस्था का भवन भी तैयार कराया गया। पटना में भी 66 वर्ष के लिए लीज डीड पर शो-रूम की बात चली ताकि इस उद्योग को बाजार उपलब्ध हो सके। लेकिन, आजतक उसका विधिवत उद्घाटन नहीं हो सका। भारत में हस्तनिर्मित कालीन निर्माण के क्षेत्रमें भदोही के बाद ओबरा ही देश का दूसरा सबसे बड़ा कालीन उद्योग था। कभी यहां 200 लूम संचालित होते थे, लेकिन अब लूम चलाने वाले कारीगरों के सामने रोजी-रोटी के लाले पड़े हैं। जब अब बक्सर के नौजवान प्रफुल्लचंद गुप्ता ने बीड़ा उठाया है तो बिहार के कालीन उद्यमियों के बीच आशा का संचार हुआ है। ◆◆◆

# अमरीका जॉर्ज फ्रलॉयड विवाद में स्वघोषित दलित विचारकों के बचकाने बयान

... डॉ. विवेक आर्य

वे कह रहे है कि जैसे अमरीका के ब्रिस्टॉल में प्रदर्शनकारियों ने गुलामों का व्यापार करने वाले एडवर्ड कोलस्टोन की मूर्ति को तोड़ दिया उसी प्रकार से जयपुर के हाई कोर्ट में स्थापित महर्षि मनु की प्रतिमा को भी हटाया जाये। इन बयानों का उद्देश्य समाज विशेष के एक वर्ग को भड़काकर उन्हें राजनीतिक हथियार के रूप में प्रयोग करना होता हैं। आप पिछले 40 वर्षों की दलित राजनीति को उठाकर देख लीजिये। हर दलित नेता आज करोड़ों के बंगलों में रहता है और महंगी गाड़ियों में चलता है। जबकि मनुवाद, ब्राह्मणवाद के नाम पर भड़काए हुए उसको वोट करने वाले आज भी वही एक कमरे के मकान में निर्धनता में जी रहे हैं। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान और पूर्व उपकुलपति कांगड़ी विश्वविद्यालय डॉ सुरेंदर कुमार ने स्वामी दयानन्द की मान्यता के अनुसार मनु स्मृति में प्रक्षेप अर्थात् मिलावटी श्लोकों को सप्रमाण चिन्हित कर मनुस्मृति सम्बंधित भ्रांतियों का समाधान किया है। उसे स्वीकार न कर रात-दिन केवल मनुवाद-ब्राह्मणवाद चिल्लाना केवल वितण्डा मात्र हैं। इस लेख में मनुस्मृति में शूद्रों की स्थिति को पाठकों के ज्ञानार्थ प्रस्तुत किया गया हैं।

मनुस्मृति के अन्तर्साक्ष्यों पर दृष्टिपात करने पर हमें कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत तथ्य उपलब्ध होते हैं जो शूद्रों के विषय में मनु की भावनाओं का संकेत देते हैं। वे इस प्रकार हैं-'दलितों, पिछड़ों को शूद्र नहीं कहा'-आजकल की दलित, पिछड़ी और जनजाति कही जाने वाली जातियों को मनु स्मृति में कहीं 'शूद्र' नहीं कहा गया है।

मनु की वर्ण व्यवस्था है, अत: सभी व्यक्तियों के वर्णों का निश्चय गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर किया गया है, जाति के आधार पर नहीं। यही कारण है कि शूद्र वर्ण में किसी जाति की गणना करके यह नहीं कहा है कि अमुक-अमुक जातियां 'शूद्र' हैं। परवर्ती समाज और व्यवस्थाकारों ने समय-समय पर शूद्र संज्ञा देकर कुछ वर्णों को शूद्र वर्ग में सम्मिलित कर दिया। कुछ लोग भ्रान्तिवश इसकी जिम्मेदारी पूरे समाज पर डाल देते हैं।◆◆◆

# रथ यात्रा

... आनन्द कुमार

कल भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा थी। इस रथ यात्र के बारे में थोड़ा जानते समझते ही आपके कई मिथकों पर से पर्दा हट जाएगा। बिलकुल आंखें चुंधियाने वाली स्थिति भी हो सकती है इसलिए अगर शेखुलर मित्र इस बारे में पढ़ें देखें तो कृपया अपना टिन का चश्मा लगाए रखें। जैसे एक तो आपको ये पता चल जायेगा कि मंदिर सरकारी कब्जे में होते हैं और पुरोहित काफी कम (3500 से 56 रुपये तक) की तनख्वाह पर काम करते हैं। उनकी भर्ती की परीक्षा होती है। जो आप मंदिर में दान देते हैं वो शहर के डीएम या DC टाइप किसी सरकारी अफसर के जरिये सरकारी कोष में जाता है। जैसा की सेक्युलर अफवाह है वैसे किसी पंडित के घर नहीं जाता। जगन्नाथ मंदिर में आम पंडितों से ऊपर एक 'दैतापति' लोग होते हैं। मजेदार चीज कि दैतापति ब्राह्मण हों ये जरूरी नहीं। तो जो सिर्फ ब्राह्मणों के पंडित-पुजारी होने का वहम है वो भी टूट जायेगा। ओर हां। एक बार रथों के नाम भी देखिएगा। उम्मीद है दमन या दलन जैसे शब्दों का अर्थ आपको पता होगा।

जिस रथ के सारथि का नाम अर्जुन है वो रथ देखिएगा। वो रथ जाहिर है सुभद्राजी का होता है। उस रथ का नाम 'देवदलन' है। क्यों है, कैसे है, जिसे सवालों से परेशान हो रहे हों तो खुद ढूंढिए अपने जवाब। हम बस वो बचपन का रट्टा हुआ सुभाषित 'ना ही सुप्तस्य सिंघस्य प्रविश्यन्ति मुखे मृगा..." याद दिला कर आज्ञा लेंगे। धन्यवाद आज एक नाम पढा। डॉ विजय सोनकर शास्त्री। नहीं, मेरा उनसे कोई परिचय नहीं। मुझे बात करनी है सोनकर और शास्त्री की। आप लोगों को पता ही होगा कि सोनकर ब्राह्मण नहीं होते। लेकिन शास्त्री की पदवी उन्होने अपनी बुद्धिमत्ता से अर्जित की है।

सुना है कि व्यक्ति विनम्र भी हैं। विद्वान हैं ही यह उनकी निर्मित ग्रंथ संपदा से पता चलता है। एमबीए, PhD के साथ-साथ शास्त्री भी हैं। किसी ब्राह्मण ने रोका नहीं, शास्त्री होने से। ना ही उनके अधिकार को कोई ब्राह्मण कम मानता है। वैसे यह भी पता चला कि घोर ब्राह्मणवादी, मनुवादि इत्यादि सभी विशेषणों से मंडित भाजपा के यह राष्ट्रीय प्रवक्ता भी हैं और हिन्दुत्व के विषय पर अधिकारी वक्ता माने जाते हैं। वैसे और भी कई शास्त्री बने हैं, हर साल बनते हैं और सम्मान भी पाते हैं और एक मजेदार बात महाराष्ट्र में संतों ने बहुत साहित्य निर्मिति की है।

पिछले कई बरसों से संत साहित्य में जिनका शब्द आखरी माना जाता है वे हैं डॉ. यूएम पठान जी, मुसलमान ही हैं। लेकिन उनका शब्द वादातीत है। ऐसे ही किसी को विद्या अर्जित करके शंकराचार्य बना देखना चाहता हूं। जाति नहीं, विद्वान पूजनीय होता है। होगा कोई SC शंकराचार्य? वैसे सवाल यह भी है कि यह सभी लेबल जैसे कि ब्राह्मणवाद, मनुवाद, मनुवादी ब्राह्मण, आदि के गढ़ने वाले कम्युनिस्ट पार्टी के पॉलिट ब्यूरो में कितने दलित हैं?

दलित की बाजू लेकर हिंदुओं को गालियां देने वाले मुसलमान भी बताएं कि देवबंद के सभी टॉप पोस्ट्स पर बाहरी नस्ल के अशरफ ही क्यों हैं, कोई भारतीय वंश का पस्मान्दा अजलफ क्यूं नहीं? क्या ये बाहरी नस्ल के याने हमलावरों के वंशज ऊपर से पटा नाजिल कर के आए हैं कि अजलफ या अरजाल मुस्लिम कभी उन पोस्ट्स पर नहीं बैठेंगे? हिन्दुत्व बहती नदिया है, प्रवाह गंदगी को साफ करते रहता है। पानी जहां थम जाता है वहां 'जीवन' नहीं रहता, उसमें काई जमाती है और सड़ांध मारती है। ◆◆◆

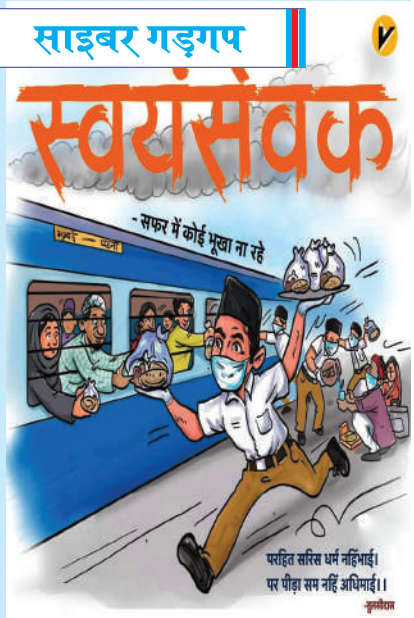

महाराष्ट्र: पालघर में 2 संतों की निर्ममता से हत्या के बाद दहल उठा देश

कहाँ गए वो लोग ?

अनेकता में एकता

स्वदेश निर्मित मेट्रो

# बहुराष्ट्रीय कंपनियों का षडयंत्र समझें

... दिनेश जोशी

क्या पतंजलि ने बंदूक की नोक पर आप को लूटा?

क्या आचार्य बालकृष्ण ने आपकी जेब काटी ?

क्या आचार्य जी ने समोसा, चटनी ताबीज, भभूत के नाम से किसी का उल्लू बनाया?

क्या 200 देशों में योग पहुंचाकर बाबा रामदेव व पतंजलि ने हाफिज सईद व दाऊद इब्राहिम जैसा गुनाह व वैश्विक अपराध किया है ?

क्या मदर टेरेसा जिसको जीते जी चमत्कारी संत घोषित किया, जो छूकर बीमारी ठीक करती थी वह हॉस्पिटल में तड़प तड़प कर मरी, आपने कभी सवाल उठाया?

क्या आचार्य बालकृष्ण या बाबा रामदेव ने खुद को भगवान, गॉड या अवतार घोषित किया ?

क्या हॉस्पिटल खोलना, अनाथालय खोलना, विद्यालय खोलना, धर्मशाला बनाना, शहीदों को सम्मानित करना, लंगर चलाना, किसान के खेत से जड़ी बूटियां खरीदकर मिलावट रहित चीजें बनाकर पाप किया है ?

क्या आचार्य बालकृष्ण ने विजय माल्या, नीरव मोदी की तरह देश को लूटने का अपराध किया है?

सालों तक आप अपनी जेब कटवा कर फेयर एंड लवली रगड़ते रहे, क्या आप गोरे हुए?

इस पतंजलि का पाप यह है कि इसने कोलगेट जो नीम, तुलसी, वेद, रामायण, महाभारत को नही मानती थी, हम हड्डियों का चूर्ण रगड़ते थे, उस 80 साल पुरानी कोलगेट को इसी हवाई चप्पल में रहकर, फटी बनियान पहनने वाले आचार्य ने वेद शक्ति बनाने को मजबूर कर दिया ?

पर उससे आपको दिक्कत नही क्योंकि हिंदुस्तान यूनिलीवर, कोलगेट, नेस्ले तो विदेशी आकाओं की कंपनियां हैं, और वह तो व्यापार नही जो कमाती हैं वह सीधो अंग्रेजों को नही प्रधानमंत्री आपदा राहत कोष में भेजती है?

क्या आप ने सवाल उठाया कि जब 2000 साल पहले महर्षि सुश्रुत 100 प्रकार की सर्जरी कर सकते थे, तो आज भारत में आयुर्वेद के ऊपर अनुसंधान क्यों नहीं की होता?

क्या आपने सवाल उठाया कभी ?

आज भारत में एलोपैथी के ऊपर सारा बजट क्यों खर्च किया जाता है ?

क्या आपने कभी कश्मीर में पत्थरबाजी करने वाले आतंकवादियों पर सवाल उठाया?

क्या आपने किसी डॉक्टर को आंखों के डॉक्टर को चश्मा लगाते हुए इलाज करते देखकर उसके ऊपर सवाल उठाया?

क्या हमने देश के अंदर लाखों विदेशी कंपनियां जो लूट रही है उस पर सवाल उठाया ?

जॉनसन एंड जॉनसन के ऊपर अमेरिका में पाउडर से कैंसर होने 32000 करोड का जुर्माना किया गया, लेकिन शायद इस पर आपको यकीन ना हो तो गूगल कर लो, क्योंकि हम तो 99 रुपये के जियो के क्रांतिकारी हो?

क्या आपने कभी उसके ऊपर सवाल उठाया ?

कभी पोस्ट डाली कि भारत मे उसको बैन किया जाए?

याद रखिये हम यह विरोध करके पतंजलि का नही भारत का नुकसान कर रहे हैं? लाला लाजपत राय ने कहा था कि पूरी दुनिया में केवल भारतीय हिंदू ऐसी कौम है जो अपने महापुरुषों, अपने व्रत, त्योहार, परंपराओं, संस्कृति और अपने भगवानों को गाली देकर उनका अपमान करके गर्व महसूस करते हैं?

हम होली पर, दिवाली पर, करवा चौथ पर, रक्षाबंधन पर, अपने भगवान श्रीकृष्ण पर, हनुमान जी को भी नही छोड़ा, उन पर चुटकुले बनाकर, उनका मजाक करके, उपहास बनाकर उनके ऊपर पोस्ट वायरल करके हम समझते हैं हम बहुत पढ़े-लिखे हो गए, सोचते है कि हमने बहुत बड़ा तीर मार लिया और हम महान हो जाएंगे। अगर हम पतंजलि, बाबा रामदेव, आचार्य बालकृष्ण को गाली देकर तीस मार खां बन सकते हैं, और भारत-रत्न मिल जायेगा, परमवीर बन जायंगे तो जरूर कीजिये, ताकि ऊपर बैठकर भगत सिंह, राजगुरु, आजाद, बिस्मिल, सावरकर जी धरती देखकर सिर पीट सकें कि इन जैसे निक्कमे, नकारा लोगों के लिए वह क्यों खामखां फांसी चढ़े?

इसलिए एक बार विचार करें कि इससे क्या होगा, किसका फायदा होगा, हम किसके मोहरे बन गए?

# रोचक एतिहासिक ज्ञान...

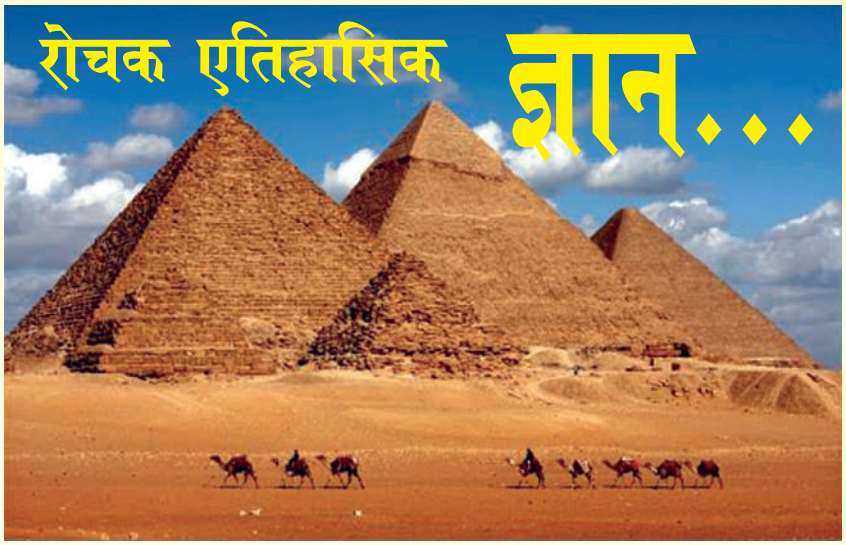

मिस्र के बहुचर्चित पिरामिड ही सिर्फ हमारे हिन्दू मंदिरों की नकल नहीं हैं बल्कि भगवान श्रीकृष्ण को मिस्र में भी पूजा जाता है। एवं जगन्नाथ यात्रा की ही तरह। मिस्र में भी जगन्नाथ यात्रा निकाली जाती है! यह सुनने में थोडा अटपटा जरुर लगता है, लेकिन, ये पूर्णतः सत्य है, दरअसल भगवान् श्रीकृष्ण को मिस्र में.... 'अमन देव' कह कर पुकारा जाता है, मिस्र के अमन देव को हमेशा को ही नील नदी के ऊपर चित्रित किया जाता है, एवं उन्हें नील त्वचाधारी के रूप में बताया जाता है, सिर्फ इतना ही नहीं, भगवान अमन देव के सर की पगड़ी के ऊपर, मोर के दो पंख लगे होने अनिवार्य हैं, और मिस्र में ऐसी मान्यता है कि इन्ही अमन देव नेसृष्टि की रचना की है, अब हिन्दू धर्म के बारे में थोड़ी सी भी जानकारी रखने वाला बच्चा भी यह बता देगा कि उपरोक्त वर्णन भगवान श्रीकृष्ण का है, और पद्म पुराण, विष्णु पुराण से लेकर श्रीमदभागवत गीता और महाभारत तक में परोक्त वर्णन देखा जा सकता है...!

सभी पुराणों एवं धार्मिक ग्रन्थ में भगवान श्रीकृष्ण को भगवान विष्णु का अवतार बताया गया है एवं भगवान श्रीकृष्ण को नील त्वचा धारी, मोर पंख युक्त। क्षीर सागर के ऊपर चित्रि किया जाता है। सिर्फ इतना ही नहीं, हमारी जगन्नाथ यात्रा की हूबहू नकल। हमें अमन देव की यात्रा में मिलता है। जिस तरह हमारे जगन्नाथ यात्रा में पहले भगवान श्रीकृष्ण, सुभद्रा एवं बलराम की प्रतिमा को नहलाकर कर एवं नए वस्त्रों एवं आभूषणों से सुसज्जित कर ढोल-नगाड़े तथा बेहद धूम-धाम से यात्रा निकाली जाती है। ठीक उसी प्रकार मिस्र में भी अमन देव, मूठ एवं खोंसू, प्रतिमा को नहलाकर।नए वस्त्रों एवं आभूषणों से सुसज्जित कर धूम-धाम एवं उल्लास के साथ। ये यात्रा निकाली जाती है।

और तो और ये रथयात्रा।... मानसून से प्रारंभ के कुछ समय बाद। पुरी के जगन्नाथ मंदिर और गुंडी का मंदिर को जोडती है। जिसकी दूरी लगभग 2 किलोमीटर है, तथा आश्चर्यजनक रूप से मिस्र में भी ये रथयात्रा जुलाई के महीने में ही। कोणार्क मंदिर और लक्सर मंदिर को जोडती है जिनके बीच की दूरी लगभग 2 मील है, हमारे रथयात्रा के ही समान.. अमन देव की भी रथयात्रा में भव्य एवं बेहद सुसज्जित रथों का प्रयोग किया जाता है, जिन्हें खींचने के लिए, किसी मशीन अथवा जानवर का प्रयोग नहीं किया जाता है। बल्कि, भक्त स्वयं उन्हें अपने हाथों से खींचते हैं। इसीलिए किसी को इस बात पर रत्ती भर भी संदेह नहीं होना चाहिए कि मिस्र का अमन देव यात्रा। कुछ और, नहीं बल्किहमारी जगन्नाथ यात्रा ही है।

परन्तु जगह, भाषा एवं सामाजिक तानाबाना के परिवर्तन के कारण उसे जगन्नाथ यात्रा की जगह अमन देव की यात्रा कहा जाने लगा। दरअसल हुआ ये कि आज से लगभग 3000 ईसा पूर्व में हमारे हिंदुस्तान और मिस्र के पहले ईरान के साथ व्यापक व्यापारिक संबंध थे तथा, भारत से मिस्र में मलमल, कपास, मसाले, सोने और हाथी दांत वगैरह बहुतायत में निर्यात किए जाते थे, इसीलिए भारतीय व्यापारियों का व्यापार के सिलसिले में मिस्र में हमेंशा आते-जाते रहने से वहां से सामाजिक और धार्मिक प्रणालियों पर हमारे हिंदुस्तान का बेहद गहरा प्रभाव पड़ा और, मिस्र के लोक कला, भाषा जगह के नाम एवं, धार्मिक परम्परा पर हिन्दू सनातन धर्म ने एक अमिट छाप छोड़ा। कदाचित।. यह भी संभव है कि मिस्र पर पहले हम हिन्दुओं का ही वर्चस्व रहा हो और, इन हजारों-लाखों सालों में मिटते-मिटते भी पिरामिड एवं रथयात्रा जैसे कुछ चीज हिन्दू सनातन धर्म के प्राचीन गौरव, महानता एवं व्यापकता की गवाही देने के लिए बचे रह गए हों। इसीलिए खुद पर लज्जित होकर अथवा मनहूस सेकुलरों के बहकावे में आकर।धर्मनिरपेक्ष ना बनें बल्कि अपने गौरवशाली इतिहास एवं उसकी व्यापकता को जानकर उस पर अभिमान करें। अमेरिका के हवाई द्वीप पर दुनिया की सबसे बड़ी टेलिस्कोप से देखने पर सूर्य की सतह मधुमक्खी के छत्ते जैसा दिखता है, ये बात हमारे ग्रंथों में हजारों साल पहले से लिखी हुई हैं। सनातन धर्म ही विज्ञान है। छान्दोग्योपनिषद 3:1 स्वामी सूर्यदेव जी से साभार लिया हुआ चित्र, ये कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में जीर्ण-शीर्ण व उपेक्षित अवस्था में चंद्रगुप्त मौर्य की समाधि है। कोई और देश होता तो अपने महान सम्राट का इतना आलीशान स्मारक बनाता कि दुनिया भर से लोग उसे देखने के लिए आते, मगर भारतीय इतिहास लिखने वाले कम्युनिस्टों, सेक्युलरों ने इस सम्राट का महत्व नजर अंदाज कर दिया, जिसने भारत को राजनीतिक रूप से एकजुट किया और एक गौरवशाली युग का इतिहास लिखा।

विडंबना है कि आज के बच्चे चंद्रगुप्त मौर्य से ज्यादा अकबर और अलेक्जेंडर के बारे में जानते हैं।

# पेंसिल और रबर

एक दिन एक पेंसिल ने रबर इरेजरसे कहा–मुझे माफ कर दो

रबर–क्यों? क्या हुआ?तुम माफी क्यों मांग रही हो।

पेंसिल–मुझे यह देखकर दु:ख होता है कि तुम्हें मेरे कारण तकलीफ पहुंचती है। जब कभी मैं कोई गलती करती हूं, तब तुम हमेशा उसे सुधार देते हो। मेरी गलतियों को मिटाते–मिटाते तुम खुद को तकलीफ पहुंचाते हो और तुम धीरे छोटे होते जाते हो और अपना अस्तित्व ही खो देते हो।

इरेजर–तुम सही कहती हो लेकिन मुझे इस बात का कोई दु:ख नहीं क्योंकि मेरे जीवन का उद्देश्य यही है। मेरे जीवन का यही उद्देश्य है कि जब कभी भी तुम गलती कर दो तो मैं तुम्हारी मदद करूं। मुझे पता है कि मैं एक दिन चला जाऊंगा और लेकिन मैं तुम्हे उदास नहीं देख सकता। मैं चाहता हूं कि मेरे जाने से पहले मैं तुम्हे गलतियां न करना एंव गलतियां सुधारना सिखा दूं ताकि जब मैं न रहूं तो तुम जीवन की इस यात्रा में कभी भी खुद को कमजोर महसूस न करो।

पेंसिल और रबर के बीच की यह बातें बहुत ही प्रेरणादायक है। हमारी मां भी इरेजर की तरह हमारी गलतियों को सुधारने के लिए हमेशा तैयार रहती है। कभी–कभी हमारी वजह से उन्हें दु:ख भी पहुंचता है लेकिन वो हमारी खुशी के लिए अपना पूरा जीवन दांव पर लगा देती है।

जो लोग पढाई या नौकरी के लिए किसी और शहर में रहते है वे मां से दूर रहने का दर्द जानते है। वे लोग मां को हर पल याद करते है और शायद कभी–कभी उनके मन में यह गाना गूंजता रहता है या फिर यह गाना सुनकर उनकी आंखों से स्वत: ही आंसू निकल आते हैं–मैं कभी बतलाता नहीं, पर अंधेरे से डरता हूं मैं मां यूं तो मैं दिखलाता नहीं, तेरी परवाह करता हूं मैं मां तुझे सब है पता, है ना मां, तुझे सब है पता, मेरी मां,

भीड़ में यूं ना छोड़ो मुझे,
घर लौट के भी आ ना पाऊं मां,
भेज ना इतना दूर मुझको तू,
याद भी तुझको आ ना पाऊं मां,
क्या इतना बुरा हूं मैं मां, मेरी मां,
जब भी कभी पापा मुझे जोर जोर से झूला झुलाते है मां,
मेरी नजर ढूंढे तुझे, सोचू यही तू आ के थामेगी मां,
उन से मैं यह कहता नहीं, पर मैं सहम जाता हूं मां,
चेहरे में आने देता नहीं, दिल ही दिल में घबराता हूं मां,
तुझे सब है पता है ना मां, मेरी मां,
जब भी कभी पापा मुझे जोर जोर से झूला झुलाते है मां,
मेरी नजर ढूंढे तुझे, सोचू यही तू आ के थामेगी मां,
उन से मैं यह कहता नहीं, पर मैं सहम जाता हूं मां,
चेहरे में आने देता नहीं, दिल ही दिल में घबराता हूं मां,
तुझे सब है पता है ना मां, मेरी मां।

## 15 अगस्त को और कौन से देश स्वतन्त्र हुए

15 अगस्त का दिन भारत के लिए तो ऐतिहासिक महत्व का है ही, साथ ही कुछ और भी ऐसे देश हैं, जहां इस दिन यह जश्न मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन वे भी स्वतंत्र हुए थे और इन देशों में भी 15 अगस्त को ही स्वतंत्रता दिवस आता है। क्या आप नहीं जानना चाहेंगे कि भारत के अलावा वे कौन–कौन से ऐसे देश हैं, जो 15 अगस्त को ही अपना–अपना स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं? आइए हम आपको बताते हैं–

1. **कॉन्गो**– कॉन्गो 15 अगस्त 1960 को फ्रांस से आजाद हुआ।
2. **बहरीन**– बहरीन 15 अगस्त 1971 को यूनाइटेड किंगडम से आजाद हुआ।
3. **साउथ कोरिया**– साउथ कोरिया 15 अगस्त 1945 को जापान से सुबह के वक्त आजाद हुआ।
4. **नॉर्थ कोरिया**– नॉर्थ कोरिया 15 अगस्त 1945 जापान से शाम के वक्त आजाद हुआ। ◆◆◆

# प्रश्नोत्तरी

1. भारत का सबसे पुराना बुक स्टॉल कौन सा है?
2. रूडयार्ड किपलिंग लिखित जंगल बुक में कहां के जंगल हैं?
3. दस राजकुमारों की कथाओं के संग्रह 'दशकुमारचरित' का रचियता कौन है?
4. अंग्रेजी भाषा के लिए पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार किसे दिया गया?
5. अंग्रेजी की प्रसिद्ध कविता 'टिवंकल-टिवंकल लिटिल स्टार के लेखक कौन हैं?
6. भारत की प्राचीनतम लिपि कौन सी है?
7. भारतीय रिजर्व बैंक के चैयर मेन कौन हैं?
8. हिमाचल का पहला मुख्यमंत्री कौन था?
9. वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव कौन हैं?
10. हिमाचल प्रदेश के नए पुलिस महानिरीक्षक कौन हैं?

1. हिग्री बॉथम्स, 2. सुन्दरवन, 3.दंडी, 4. अमिताभ घोष, 5. लुईस कैरोल, 6. ब्राहमी, 7. डॉ. शक्तिकांत दास, 8. डॉ. यशवंत सिंह परमार, 9. अनिल खाची, 10. संजय कुंडु।

# पहेलियां

1. रात दिन है मेरा  
तुम्हारे घर में डेरा।  
रोज मीठे गीत से  
करती नया सवेरा।

2. पीपल की ऊंची डाली पर,  
बैठी वह गाती है।  
तुम्हें हमें अपनी बोली में  
वह संदेश सुनाती है।

3. कमर कसकर बुढ़िया रानी,  
रोज सवेरे चलती है।  
सारे घर में घूम-घूमकर  
साफ-सफाई करती है।

4. पानी का मटका  
पेड़ पर लटका।  
हवा हो या झटका  
उसको नहीं पटका।

उत्तर : 1. गौरेया 2. चिड़िया 3. झाड़ू 4. टमाटर  
– नरेश कुमार नामदेव साभार- देवपुत्र

# चुटकुले

1. डॉक्टर मरीज के पीछे भाग रहा था....  
लोगों ने पूछा – क्या हुआ..?.  
डॉक्टर – चार बार ऐसा हो चुका है...  
ये दिमाग का ऑपरेशन करवाने आता है...  
और....  
हर बार बाल कटवा के भाग जाता है...।।।

2.. मास्टर जी: अगर पृथ्वी के अंदर LAVA है तो बाहर क्या है ?  
संजू: मास्टर जी बाहर ओप्पो और VIVO है।

3. टीचर (स्टूडेंट से): सेमेस्टर सिस्टम से क्या फायदा है, बताओ?  
स्टूडेंट : फायदा तो पता नहीं, पर बेइज्जती साल में दो बार ठीक करनी पड़ती है।

4. टीचर: बिजली कहां से आती है?  
टीटू: सर, मामाजी के यहां से।  
टीचर: वो कैसे?  
टीटू : जब भी बिजली जाती है पापा कहते हैं,  
....ं ने फिर बिजली काट दी।

5. टीचर: मैं 2 वाक्य दूंगा आपको उसमें अंतर बताना है  
उसने बर्तन धोये।  
उसे बर्तन धोने पड़े।  
छात्र : उसने बर्तन धोये (अविवाहित)  
छात्र : उसे बर्तन धोने पड़े (विवाहित)

# कोविड महामारी के दौरान विभिन्न सेवा कार्यों की एक झलक

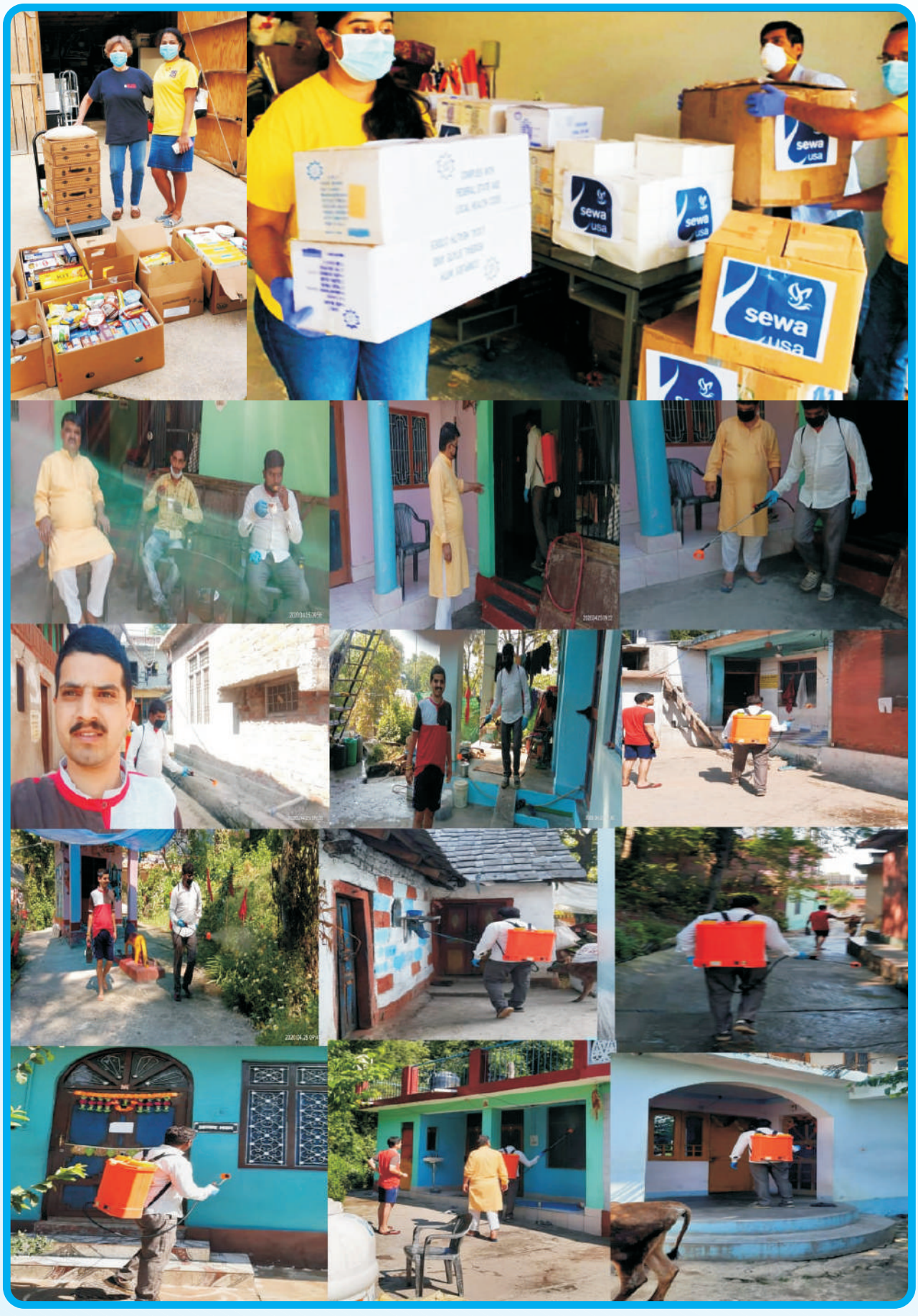

# मुख्यमंत्री स्वावलम्बन योजना से आत्मनिर्भर हिमाचल की ओर बढ़े कदम...

## हिमाचली युवाओं के लिए खोले स्वरोज़गार के स्वर्णिम द्वार

18 से 45 वर्ष
आयुवर्ग के
युवा पात्र

₹60 लाख तक के
प्रोजेक्ट का
उठाएं लाभ

प्रोजेक्ट के ₹40 लाख तक के प्लांट, मशीनरी व इक्विपमेंट्स
पर विधवाओं को 35% महिलाओं को 30% तथा अन्य को
25% सब्सिडी देगी सरकार

₹40 लाख के ऋण पर
3 वर्ष तक ब्याज में
5% की मिलेगी छूट

औद्योगिक क्षेत्रों में
सस्ती दरों पर होगा
भूमि आवंटन

## योजना तथा औद्योगिक निवेश नीति – 2019 का लाभ उठाने के लिए लॉग–इन करें emerginghimachal.hp.gov.in

- आवेदन व अन्य सूचना emerginghimachal.hp.gov.in पर उपलब्ध है
- अधिक जानकारी के लिए जिला के महा प्रबन्धक जिला उद्योग केन्द्र या mmsyhp2018@gmail.com पर भी सम्पर्क किया जा सकता है

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp